शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

● वर्ष 1 ● अंक 3 ● उदयपुर, सोमवार 15 फरवरी 2016 ● पेज 8 ● मूल्य 5 रू

पहलीबार 13-14 फरवरी को आयोजित यह समारोह यादगार तोहफा बन गया

फतह पाल पर वाद्य वादकों का वैश्विक सम्मोहन

मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का बांसों उल्लास उन्हें थिरकने से नहीं रोक पाया

सम्मेलन से यह सीख मिली कि हम हमेशा अपने पुरखों की बातों को ध्यान से सुनें, सीखें। हमें कहीं नहीं जाना है। हमें लौट कर हमारे पारम्परिक संगीत की ओर ही आना है। उसी में सुकून, शांति, विश्व बंधुत्व और जीवन की सभी समस्याओं के हल छिपे हैं।

डॉ. तुक्तक भानावत

उदयपुर। हिन्दुतान जिंक, वन्डर सीमेंट तथा राजस्थान ट्यूरिज्म की ओर से 13-14 फरवरी को आयोजित वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल कभी उमंग की लहरों पर सुरों की तितलियां नाचीं तो कभी अरावली के पहाड़ों ने सर्द हवाओं के साथ मुहब्बत का टीका लगाया। हवा में घुली देसराग के बीच विश्वराग के परिंदों ने फतहसागर पाल पर स्वर-गंगा का कमल खिला दिया। तरंगित दिल बार-बार वाह-वाह कर उठे। तालियां गूंज उठी।

सर्बिया, नीदरलैण्ड्स, भारत और ईरान के कलाकारों द्वारा वाद्य यंत्रों पर पंचक प्रस्तुति के बाद पियानों पर एलेक्जेंडर सिमिक, चेलो पर शास्किया राव दी हास, सितार पर शुभेन्द्र राव, तुम्बा डफ पर फकरूद्दीन गफारी और वायलिन पर शरदचंद्र श्रीवास्तव ने कई पीस नोट, देस राग, रबीन्द्र संगीत का एकला चालो रे, स्पेन के यायावरों का संगीत, नीदरलेण्ड्स की देहाती धुनों पर जुगलबंदी का फ्यूजन पेश किया। स्पेनिश गिटार वादक जोस मारिया गलार्दो देल ने दिल के तारों को छेड़ खूब दाद पायी। दिन के कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति में फादो गायक कारमिन्हो ने पुर्तगाल के गीतों की प्रस्तुतियों से रोमांचित कर दिया। पाल पर विशेष रूप से बनाए गए स्टेज के अलावा जहां जगह मिली वहीं बैठे-खड़े होकर लोगों ने कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। यूरोप में अपनी एलबम फेदा और आल्मा से धूम मचाने वाली लोक गायिक कारमिन्हो ने कहा कि संगीत के सितारे हमेशा पीस एम्बेसेडर की तरह काम करते हैं। उनकी उड़ान किसी एक देश या किसी प्रांत की सीमाओं में बंधकर नहीं रहती। अपनी मां से संगीत सीखने से पहले मैंने वर्ल्ड ट्यूर किया। उससे जाना कि संगीत की दुनिया बड़ी विविध, विशाल और दिल को छू लेने वाली है। कारमिन्हो ने कहा कि हमेशा अपने पुरखों की बातों को ध्यान से सुनें, सीखें। हमें कहीं नहीं जाना है। हमें लौट कर हमारे पारम्परिक संगीत की ओर ही आना है। उसी में सुकून, शांति, विश्व बंधुत्व और जीवन की सभी समस्याओं के हल छिपे हैं।

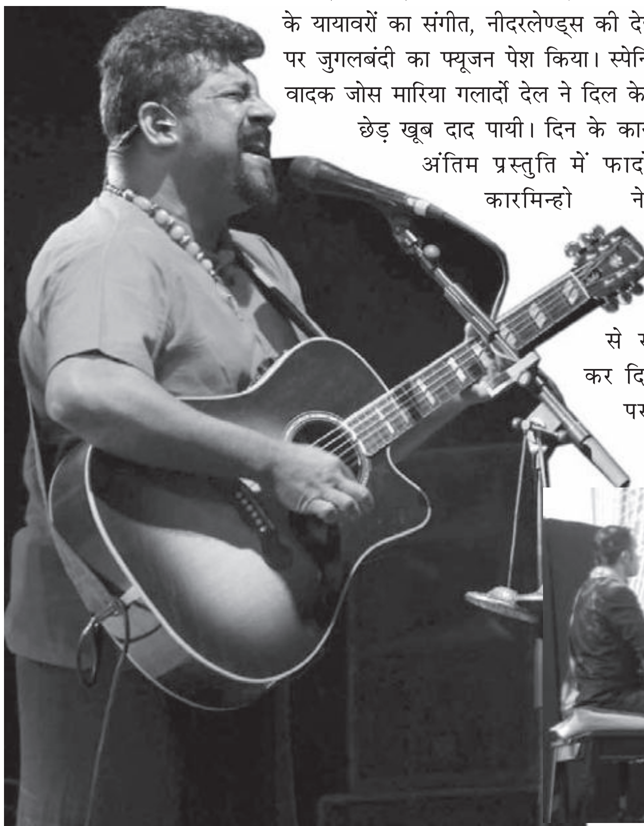

पियानो वादक एजेक्जेण्डर ने कहा कि झीलों की नगरी की तुलना मैं अपनी प्रेयसी से करता हूं। इस खुशनुमा मौसम में अपनी हर कंसर्ट में लोगों का प्यार मुझे बार-बार नई बंदिशों के विचार और उल्लास से भर देता है।

रेलव ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट ग्रांउड पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने वर्ल्ड म्युजिक फेस्टिवल के आयोजन को उदयपुर के संगीत-इतिहास में मील का पत्थर और भारतीय संस्कृति की पहचान के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि देश-विदेश के संगीतज्ञ एवं कलाकार कला और संस्कृति को एकरूपता प्रदान कर विश्वमैत्री की भावनाओं को बढ़ावा देंगे। साथ ही भारत में आने वाले पर्यटकों के लिए यह एक ऐसा वार्षिक आयोजन बनकर उभरेगा जिसे अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पर्यटक अपने सालाना यात्रा कलेण्डर में शामिल करेंगे। शहर के युवाओं के हुजूम के जोश के बीच कार्यक्रम की शुरुआत फ्लेमेंको म्यूजिक एंड डांस समूह के स्पेन के गिटार और ताल-लय के साथ सिंगल व ड्यूएट प्रस्तुति से हुई।

उदयपुर जिले में जल स्वावलंबन अभियान

पुलिस जवानों ने किया श्रमदान

उदयपुर। मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के अन्तर्गत उदयपुर जिले की गिर्वा पंचायत समिति अन्तर्गत बाँरा ग्राम पंचायत में पहाड़ियों के बीच अवस्थित बाँरा तालाब को आबाद करने का अभियान शुरू हुआ। इसमें पुलिस प्रशासन ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और इस काम को पूरा करने का संकल्प लेते हुए पुलिस महानिरीक्षक आनंद श्रीवास्तव के नेतृत्व में पुलिस के सवा सौ से अधिक जवानों और महिला पुलिस के समूह ने दमखम दिखाया।

इसमें ग्रामीण स्त्री-पुरुषों की उत्साहजनक भागीदारी रही वहीं जिला कलक्टर रोहित गुप्ता, जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्रप्रसाद गोयल, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी, उपखण्ड अधिकारी नम्रता वृष्णि, पुलिस उप अधीक्षक रानू शर्मा व नारायणसिंह, विकास अधिकारी अजयकुमार आर्य, एसएचओ परसाद भरत योगी, आरआई अब्दुल रहमान सहित पुलिस, जिला प्रशासन एवं गिर्वा पंचायत समिति के अधिकारियों एवं कार्मिकों ने हाथों में गैंती-फावड़े व तगारे लेकर सामूहिक श्रमदान किया।

उल्लेखनीय है कि दो-तीन दशक पहले बाँरा ग्राम पंचायत का नाका वाला तालाब क्षेत्र का बड़ा जल भण्डार था लेकिन पहाड़ों से पानी के साथ बहकर आने वाली मिट्टी के कारण इसमें भराव होता गया। इससे तालाब में पानी का संग्रहण कम होता गया। खूब बरसात के बावजूद नाका वाला

(शेष पृष्ठ चार पर)

श्रमदान करते जिला कलक्टर, पुलिस अधीक्षक व पुलिस जवान।

स्मृतियों के शिखर (3) ज़ुरहरा में रावण बनते डॉ. जीवनसिंह

–डॉ. महेन्द्र भानावत–

डॉ. जीवनसिंह से मेरी प्रथम भेंट बूंदी में हुई जब वे वहां के राजकीय कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक थे। हम लोग, डॉ. भगवतीलाल व्यास, किशन दाधीच और मैं, कोटा गए हुए थे। वहां की भारतेंदु समिति के स्वर्ण जयंती समारोह का अच्छा जलसा था। लौटते समय किशन बाबू का तगड़ा आग्रह था कि एक समय के लिए ही सही, उनके जन्मस्थान बूंदी ठहर लिया जाय।

यह दिन 17 अक्टूबर 1978 का था और प्रसंग कवि गोष्ठी का बना लिया गया था। गोष्ठी का आयोजन साप्ताहिक दकाल के यशस्वी सम्पादक घनश्याम लाड़ला ने राजमार्ग के संपादक बजरंग पांथी के कार्यालय में रखा। घनश्याम लाड़ला तब तक कवि के रूप में भलीप्रकार चर्चित हो चुके थे और पांथी उदयपुर में रहने के कारण पत्रकारिता और धारदार लेखन के जरिए हमारे अच्छे घनिष्ठ मित्रों में थे। इसी गोष्ठी में प्रो. जीवनसिंह से पहलीबार बड़ी सुखद भेंट हुई जो अब अति गहन आत्मीयता के रूप में हमें बांधे हुए है। यों लेखन–परिचय उनसे पूर्व में हो चुका था जब वे एम.ए. की पढ़ाई कर रहे थे और उस दौरान उन्होंने अलीबक्षी ख्यालों पर लघु शोधप्रबंध लिखा था।

मुझे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्हें अपने क्षेत्र के लोक क्षेत्र से जुड़ी कला–परम्पराओं और जीवनरस से ओतप्रोत बहुरंगे अनुरंजन–उत्सवों की गहरी और पुख्ती जानकारी ही नहीं, उस जानकारी से आह्लादित होते हुए उसे संरक्षित और सुरक्षित रखते हुए यथा समय प्रचारित एवं प्रदर्शित करने की भी मनोयोगी सुधसुधी है। लोकविधाओं की सजग जानकारी देते हुए वे कई बार अपने अभिनयानंद में खोते लगे और मुझे भी वह भावभूमि दिखाते चले गये जिसके वशीभूत होकर लोक–समाज जिंदादिल बना रहता है।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने अपने ही जन्मस्थल भरतपुर जिले की कामां तहसील के गांव जुरहरा की रामलीला के बारे में बताना प्रारंभ कर दिया। मेरे लिए यह सर्वथा अजीब और अब तक नहीं जानी जानकारी थी लगा जैसे किसी छलकते बांध के कई गेट खुल गये हैं और मुझे जैसे अति सावधानीपूर्वक की जा रही किसी टीले की खुदाई से कई महत्वपूर्ण सामग्री और सूचनाएं हाथ लगती जा रही हैं।

राम का वनगमन बड़ा ही कारुणिक दृश्य उपस्थित कर देता है। सारा गांव तब आंसुओं की धारा में बहता नजर आता है। वनवासी वेश में राम लखन सीता द्वारा पूरे गांव की गली–गली पांवों से नापी जाती है। सबका मुजरा लेते हुए राम बढ़ते चलते हैं। पांवों में उनके पावड़ियां रहती हैं और आगे–आगे धोबी पट्टियां फैलाता चलता है। सभी वनवासी इन्हीं पट्टियों पर अपने चरण देते बढ़ते रहते हैं। रास्ते में ही सवाल–जवाब में रामलीला चलती है। अंत में सब नदी के किनारे पहुंचते हैं जहां नाव तैयार रहती है पर केवट उसमें बैठने नहीं देता है। संवाद चलते हैं फिर नदी पार की जाती है।

गांव में लीला के ये सारे स्थान जुदा–जुदा हैं। अशोकवाटिका का बाग अलग तालाब के किनारे वाले बगीचे में, रावण वध का स्थान अलग। लंका दहन का अलग। कितना सुन्दर सुव्यवस्थित जमाव है इस रामलीला का! कितनी मोहक सम्मोहक है यह लीला और यही कारण है कि कभी यह बंद नहीं हुई। प्रतिवर्ष नया रूप, रंग, तेवर लेकर यह आती है और सारे गांव को लीलामय मगन छगन कर जाती है। पूरी रामलीला में सीताहरण वाला प्रसंग सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहता है तब लगता है जैसे कोई छलिया दुष्ट जुरहरा की ही कोई सीता हरकर ले गया है।

जुरहरा का ठाकुर घराना प्रारंभ से ही इस लीला का रीढ़–संबल रहा है और आज भी यही घराना इसका प्रमुख प्रेरक जीवक है। लीला प्रारंभ से पूर्व अश्विन कृष्णा प्रतिपदा को सारे गांव की पंचायत जुड़ती है। ठाकुर साहब के वहीं मुख्य–मुख्य पात्रों का चयन किया जाता है और सारी व्यवस्थामूलक चर्चाएं कर ली जाती हैं। वर्तमान में ठाकुर देवीसिंह यहां की रामलीला कमेटी के अध्यक्ष भी हैं और सब प्रकार से प्रेरक संचेतक भी। प्रो. जीवनसिंह इन्हीं ठाकुर साहब के सुपुत्र हैं जो अपने घर–गांव की रामलीला में रावण, निशाद अरौर तुलसीदास के अभिमंचन को बखूबी निभाते हैं।

रामलीला में उनका भाग लेना कैसे संभव हुआ पूछने पर उन्होंने एक दिलचस्प घटना सुनाते हुए बताया कि रावण के अभिनय को ठीक से अभिनीत करनेवाला और चौपाइयों को शुद्ध बोलनेवाला जब कोई नहीं मिला तो दर्शकों के बीच बैठे मुझे लोगों ने कहा कि क्यों नहीं आप पढ़े लिखे यह काम करते हैं ! फिर आपकी पढ़ाई का हम लोगों को क्या लाभ! जीवनसिंह को इतनी सी बात असर कर गई और वे मंच पर चढ़ आए। वे इसे प्रभु की लीला ही मानते हैं जिसके कारण अपने इस काम में खरे उतरते जा रहे हैं।

इस रामलीला में लंका दहन का प्रसंग भी दिन में किया जाता है। गाँव की पूरब दिशा में बना हुआ इन्द्रकुटी नामक एक सरोवरीय स्थान है जहाँ एक सरोवर के किनारे पर बनी हुई एक बगीची तथा हनुमान–मंदिर है। इस बगीची को अशोक वाटिका का रूप प्रदान किया जाता है तथा लंका का एक आवास–रूप वाला बड़े आकार का पुतला बनाकर, लंका दहन का दृश्य दिखाने के लिए सरोवर के किनारे एक ऊंचे स्थान पर पहले से रख दिया जाता है।

रामलीला की इस शैली में जुलूस एवं सवारी का विशेष स्थान है। राम, लक्ष्मण, सीता आदि स्वरूप श्रृंगार स्थल से जब भी बाहर जाते हैं, तभी उनका श्रृंगार किया जाता है और वे सवारी पर ही बाहर प्रस्थान करते हैं। पहले उनको पालकियों में सिंहासन जमाकर कहार ले जाया करते थे। अब ट्रेक्टर पर सिंहासन बाँधकर और उसे सजाकर जुलूस की शक्ल में ले जाया जाता है। राम की बारात का दृश्य भी अनूठा होता है। राम के विवाह का पूरा प्रसंग वैसे ही सम्पन्न किया जाता है।

जुरहरा की यह रामलीला राजस्थान में प्रचलित विविध रामलीलाओं से भिन्न अनूठी और अनोखी रामलीला है। प्रो. जीवनसिंह इसमें मुख्य रूप से रावण की भूमिका निभाते हैं जो अभिनय कौशल, परंपरागत वीरोचित शैली, शौर्यपूर्ण संवाद, निर्भीक तथा दबंग डीलडौल और गरजती एवं दहाड़ खाती भयावह आवाज के कारण साक्षात रावण रसिया बन जन–जन में अपनी लोकप्रियता के कारण सम्माननीय बने हुए हैं।

उनके चित्त में लोकचित्त की मंदाकिनी का प्रवाह ही इस परंपरा की पवित्रता का आस्थामूलक निर्वाह लिए है। वे तथाकथित आधुनिकता से कोसों दूर हैं। लोकमंगल की अवधारणा की आराधना के संस्कारों की विरासत ने ही उन्हें अपनी प्रोफेसरी के दबदबे को हावी नहीं होने दिया और वे रावण की भूमिका के सौजन्य में उतर आए अन्यथा जुरहरा की यह लीला देखने के लाले ही पड़ जाते और संभवत: सदा के लिए रामलीला कमेटी के ताले जड़ जाते।

मोलेला मृण मूर्तियों के प्रख्यात शिल्पकार मोहनजी

-डॉ. कहानी भानावत-

उदयपुर से लगभग 55 किलोमीटर दूर प्रसिद्ध रणक्षेत्र हल्दीघाटी के पास खमनौर से सटे मोलेला गांव की मृण–मूर्तियाँ राजस्थान से बाहर गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तक ले जाई जाती हैं। यह मोलेला भी कम प्राचीन नहीं है। कहा जाता है कि पहले यहाँ जैगढ़ नामक स्थान था। इसे जूना नाथद्वारा भी कहते थे। वर्तमान नाथद्वारा, (प्रसिद्ध तीर्थ, श्रीनाथजीवाला श्रीनाथद्वारा) यहाँ से 12 किलोमीटर दूर है।

यहां के मूर्तिकारों में मोहनलाल कुम्हार अग्रणी कलाकार हैं जिन्होंने सर्वाधिक पुरस्कार और सम्मान अर्जित किये। 04 फरवरी 1939 को जन्मे मोहनजी ने आठ वर्ष की उम्र से ही अपने पिताश्री से मृणशिल्प की बारीकियां जानकर मूर्ति निर्माण शुरू कर दिया। सन् 1981 में पहली बार इनके हाथ की बनी मूर्तियां पसंद कर इंगलैण्ड ले जायी गई। उसके बाद तो उनका सितारा बुलंदी को स्पर्श करता ही रहा। विदेशों में कई जगह इनकी कला–कृतियां खरीदी गई। सन् 1986 में अमेरिका की एक प्रदर्शनी में मोहनजी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। वहां इन्हें विशिष्ट पहचान मिली।

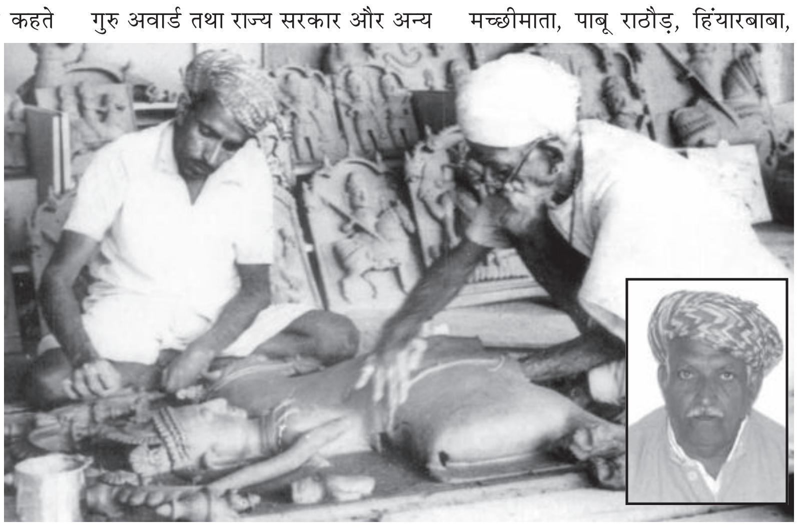

1982 में पर्यटन विभाग ने इनकी कलाधर्मिता को जगजाहिर किया। नई दिल्ली में इनके द्वारा बनाये गये 24 गुणा 6 फीट के पैनल को बड़ी सराहना मिली। इसी पैनल को इंगलैण्ड की एक प्रदर्शनी में उत्कृष्टता मिली। इसके पश्चात् 1986 में अमेरिका के मदर अर्थ फोरम में आयोजित कार्यशाला तथा 1991 में फ्रांस की एक कार्यशाला में इनके शिल्प को देख लोग दांतों तले अंगुली दबाने को विवश हुए। फिर तो कई सम्मानों तथा पुरस्कारों की झड़ी लग गई। जापान तथा पेरिस में भी वहां की सरकार के निमंत्रण पर उन्होंने कार्यशाला आयोजित की।

राष्ट्रपति द्वारा नेशनल अवार्ड, शिल्प गुरु अवार्ड तथा राज्य सरकार और अन्य कई संस्थानों, प्रतिष्ठानों द्वारा प्रदत्त अवार्ड इनका दिन दूना सम्मान बढ़ाते रहे। 4 अप्रैल 2012 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा पद्मश्री से इन्हें सम्मानित किया गया। इनके सुपुत्र दिनेश ने भी इस कला परम्परा को साधकर कई नये प्रयोग किये हैं। कई सार्वजनिक संस्थानों तथा प्रतिष्ठानों में इनके पैनल अद्भुत शिल्प कला से शोभित हैं। उदयपुर के सिटी रेल्वे स्टेशन के मुख्य द्वार के एक ओर इनका विशाल पैनल सहज ही सबको चकित किये रहता है।

मोहनजी ने बताया कि विक्रम संवत् 1697 में मोलेला का बसना प्रारंभ हुआ। दो भाइयों में से एक भाई घाटा (ऊंचा ढलान) चढ़ा और दूसरा जयगढ़ आया। ढलान पर मोल्या नामक ओड़ रहता था। उसी के नाम से जो बस्ती शुरू हुई वह कालान्तर में मोलेला नाम से जानी गई। यहां धर्मराज, भेरूजी, नारसिंघी, पाड़ावाली माता, कालका, हाथीवाली हस्ति माता, गोरज्या, सांडमाता, राईका, मच्छीमाता, पाबू राठौड़, हिंयारबाबा, ताखा राजकुमार, पंखेरू घोड़ा, भेरू गोड़लो, ईंटा–सती का हाथ, देवनारायण, एकलो भेरू खेतरपाल, नागणीमाता, मूर्गामाता, काला गोरा भैरू आदि की मूर्तियां बनाई जाती हैं।

ये मूर्तियां विशेष संस्कारों, अनुष्ठानों के साथ विविध प्रांतों में ले जाई जाकर देवरों, देवल मंदिरों में स्थापित की जाती हैं। देश–विदेश के कई संग्रहालयों तथा विशिष्ट हवेलियों, होटलों की दीवालों पर इनके पैनल सहज ही सबको चकित किये रहते हैं। अब तो मोलेला का नाम टेराकोटा की दुनिया में सर्वाधिक प्रसिद्धि लिये है।

प्रकृति खराड़ी को राज्यमंत्री का दर्जा

उदयपुर। राजस्थान अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्ष श्रीमती प्रकृति खराड़ी को राज्यपाल महोदय द्वारा राज्यमंत्री स्तर का दर्जा प्रदान किया गया है। अतिरिक्त मुख्य सचिव अजीतकुमार सिंह द्वारा जारी आज्ञा के अनुसार श्रीमती खराड़ी को यह सुविधा उनके द्वारा कार्य ग्रहण की तिथि से देय होगी।

खराड़ी ने बताया कि उनकी प्राथमिकताओं में राज्य में निवास कर रहे अनुसूचित जनजातियों से संबंधित लंबित पड़े परिवादों का शीघ्र निस्तारण करना, आदिवासियों को वन अधिकार कानून के पट्टे शीघ्र उपलब्ध कराना, सरकारी योजनाओं की शीघ्र क्रियान्विति कराना, जनजाति क्षेत्र की महिलाओं को भामाशाह योजना से अधिकाधिक लाभान्वित कराना, जनजाति विकास विभाग के समग्र बजट की क्रियान्विति हेतु जिम्मेदारी सुनिश्चित कराना तथा सरकारी नौकरियों में भर्ती के समय जनजातियों के लोगों को नियमानुसार समुचित प्रतिनिधित्व दिलाना रहेगा।

कलक्टर सम्मानित

उदयपुर। महात्मा गांधी नरेगा में उत्कृष्ट कार्य के लिए उदयपुर जिला कलक्टर रोहित गुप्ता को सम्मानित किया गया। यह सम्मान केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह ने नई दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदान किया।

उल्लेखनीय है कि पाली जिले में कलक्टर रहते हुए श्री गुप्ता ने महात्मा गांधी नरेगा योजना में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित की थीं जिसकी बदौलत पाली जिला देश के आठ श्रेष्ठ जिलों में शामिल हो सका। वर्तमान में श्री गुप्ता उदयपुर में स्मार्ट सिटी के रूप में विभिन्न विकास योजनाओं और कार्यक्रमों में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

कहँ बदल्यो हिन्दथान

–प्रो. देवकर्ण सिंह रूपाहेली–

(1)

अजहुं कढ़ै जगनाथ रथ, अजहुं ताजिया शान।
गुरु री असवार्यां कढ़ै, कहँ बदल्यो हिन्दथान।।

(2)

अजहुं गंगा ऊजळी, अजहुं जमना जाण।
सुरसत अजहुं अदीठ है, कहँ बदल्यो हिन्दथान।।

(3)

गाय घास चिड़ियां चुगौ, कीट माछळ्यां दाण।
दूध नाग अर कागलां, कहँ बदल्यो हिन्दथान।।

(4)

अजहुं भोपा औतरै, झाड़ा फूंका जाण।
डोरा–डांडा मादळ्या, कहँ बदल्यो हिन्दथान।।

86वें जन्मदिवस पर 'शब्द रंजन' की हार्दिक बधाई

पिछले दिनों प्रख्यात कवि बालकवि बैरागी तथा सुख्यात लेखिका सुधारानी श्रीवास्तव ने 86वें वर्ष में प्रवेश किया। इस अवसर पर 'शब्द रंजन' परिवार द्वारा हार्दिक बधाई।

बालकवि बैरागी पिछले साठ-सत्तर वर्षों से भारतीय कवि सम्मेलनों के अग्रणी कवियों में अपनी लोकप्रियता बढ़त किये हुए हैं। लालकिले से लेकर लालमादड़ी तक उन्होंने पूरे देश का भ्रमण कर अनगिनत लोकजन को अपनी काव्य चेतना से रसमग्न किया है। हमारे गांव कानोड़ में भी उनकी वाणी कल्याणी बनकर जयकारी गई। इस अवसर पर उनकी भेजी काव्याभिव्यक्ति तथा प्रतिदिन उनका सान्निध्य पाने वाले मनासा के लोकसाहित्य विशारद डॉ. पूरन सहगल की टीप प्रकाशित की जा रही है।

प्रतिदिन उनका सान्निध्य मेरी दिनचर्या का सुखद भाग

जब कोई व्यक्ति भव्यता प्राप्त कर लेता है तब उसे नाप पाना कठिन हो जाता है। वामन ने जब विराट रूप धारण कर लिया तब उसकी विराटता को नाप पाना असंभव हो गया। बालकवि बैरागी भी वामन से विराट बन सारे देश और दुनिया को नापते स्वयं एक नाप-नपीना बन गये हैं। पाठ से पाठशाला बन गये हैं। कंदब से कल्प हो गये हैं। उनकी कविता में कदम्ब जैसी रसीली मिठास है। वे कवि से कवित्त हो गए हैं। काव्य हो गये हैं।

प्रतिदिन सवेरे साढ़ा आठ से साढ़ा नौ बजे तक मैं उनके निवास पर जाकर उनका सान्निध्य पाता हूं। एक कप बिना दूध-शक्कर की संजीवनी पीते हैं। कई बार हम दोनों में कोई बात नहीं होती। वे समाचार पत्र पढ़ते रहते हैं और मैं वहां टेबल पर धरी पत्रिकाएं या पुस्तकें टटोलता रहता हूं। चलते समय 'दादा चलता हूं' कहकर विदा लेता हूं तब वे पूछते हैं - 'उषागंज में सब ठीक तो है ? कृष्णा (मेरी बीमार पत्नी) ठीक है ?' जब भाभी थी तब मैं उनके द्वारा अपनी बात कहता था। तब उत्तर भी मिल जाता था। अब तो वह माध्यम भी नहीं रहा। अपना दुख-सुख कछु कहि नेननि सों, तो कछु कहि सेननि सों। दादा का होना मेरे लिए कल्पवृक्ष की एक शीतल छाया है। कल्पवृक्ष से कुछ मांगा नहीं जाता। केवल कामना की जाती है।

एकबार मैंने दादा से पूछा- सत्य क्या है ? उन्होंने वैसा ही उत्तर दिया- जो प्रत्येक स्थिति में सत्य ही रहे। फिर झूठ क्या है ? जो किसी भी स्थिति में सत्य नहीं बन सके। मैंने पूछा 'फिर सत्य और झूठ में अन्तर क्या है ? बोले- जो अन्तर है या नहीं में है। जो है वह सत्य। उसी का अस्तित्व कायम रहता है। जो नहीं है वह झूठ। जो अस्तित्व विहीन हो जाता है। ऐसा ही एक और प्रश्न मैंने एकबार किया था। दादा देश और राष्ट्र में क्या अंतर है ? दादा ने अखबार पर से ध्यान हटाकर कहा- देश हमारा भूगोल है और राष्ट्र हमारा प्राण है। जब हमारा सैनिक सीमा पर युद्ध करता है तब वह देश के लिए युद्ध करता है किंतु उसे देश के लिए युद्ध करने के लिए, देश की रक्षा करने के लिए, देश की रक्षा करते हुए प्राण तक न्यौछावर कर देने के लिए जो शक्ति प्रेरित करती है वह राष्ट्रीय भावना है। जैसे यह हमारा पंचभूत शरीर है। हम इसकी रक्षा-सुरक्षा के लिए जब भी तत्पर होते हैं तब परोक्ष रूप से हम अपने प्राण की रक्षा के लिए ही तत्पर होते हैं। ये नदियां, ये पहाड़, ये खेत, यह वसुंधरा और इसके भीतर या ऊपर समस्त भौतिक सम्पत्तियां हमारा देश है। हमारी संस्कृति, हमारी मर्यादाएं, हमारा आध्यात्मिक वांग्मय, हमारा इतिहास, हमारी सहिष्णुता, समभाव, भ्रातृभाव, आस्तिकता, देश के प्रति प्रेम, संलग्नता आदि भव्य भावनाएं तथा त्याग, तपस्या, सत्य, निष्ठा आदि भव्य भावों का समुच्चय हमारा राष्ट्र है।

-डॉ. पूरन सहगल

सत्य और ईमान की कभी न छूटे राह

-बालकवि बैरागी-

दीनबंधु दातार की मुझ पर दया विशेष।
वह ही हरता है सदा मेरे कष्ट कलेश।।
पिच्यासी पूरे हुए लगा छियासी आज।
सुरसत माता नित्य ही रखती आई लाज।।
भुजबल, धनबल, राजबल सब माया का फेर।
ये बल प्रभु से मांगना है सचमुच अंधेर।।
ईश्वर ही करता सदा संकल्पों को सिद्ध।
यश कीर्ति देता वही करता वही प्रसिद्ध।।
मांग रहा हूं आपसे अंतर की आशीष।
कृपा करें और दें मुझे सिर्फ यही बक्षीश।
मात्र यही है प्रार्थना सिर्फ यही है चाह।
सत्य और ईमान की कभी न छूटे राह।।

प्रेम की सार्थकता प्रेयसी से : जैनेन्द्र

पत्नी और प्रेयसी को मैं अनिवार्य मानता हूं। प्रेम एक ऐसी विवशता है कि उस ओर आदमी खींचता है। प्रेम की सार्थकता पत्नी से नहीं, प्रेयसी से होती है जिसके प्रति आदमी समर्पित हो जाता है।

यदि हम पति-पत्नी प्रेमी-प्रमिका चारों को अनिवार्य मान लेते हैं तो फिर कोई टूटन नहीं रहेगी। समाज में यदि इसे स्वीकारने की तैयारी नहीं है तो छल रहता है। हम लाख छिपाने की कोशिश करें, प्रेम छिपा नहीं है। उसकी महिमा ही यह है कि संयम उससे हारता है।

महिलाओं को अपेक्षाकृत कम सुविधाएं हैं इसलिए हमें लगता है कि पुरूष ही इस ओर अधिक सक्रिय लगता है। प्रेम विवाह के बाद भी प्रेमी-प्रेमिका का अस्तित्व अडिग रहता है।जो अनिवार्य है, उसे यदि स्त्री स्वीकारेगी नहीं तो उसका फल भोगेगी और भोग भी रही है।

प्रेयसी एक प्रकार की अप्सरा है जिसके पास शरीर है ही नहीं। वह तो अपनी आंखें हैं जो शरीर दे देती है। यदि प्रेयसी के साथ भोगात्मक संबंध स्थापित कर लेंगे तो प्रेयसी भाव समाप्त हो जायेगा। फिर आप अप्राप्ति की ओर चलते रहेंगे।

- 22 अप्रेल 1980 को उदयपुर में हुई भेंट के दौरान जैसा जैनेन्द्रजी ने डॉ. महेन्द्र भानावत को बताया।

बधाई

गोपाल शर्मा शहर कांग्रेस अध्यक्ष बने

मोहनलाल सुखाड़िया की पुत्रवधू नीलिमा सुखाड़िया के बाद गोपाल शर्मा का शहर कांग्रेस अध्यक्ष बनना कई दृष्टियों से उत्साहवर्धक माना जा रहा है। श्री शर्मा गोपजी के नाम से जन समाज में खासे चर्चित हैं। उनका पायदान इसलिये भी मजबूत और अनुभवों की सजग पहचान लिये है कि वे पूर्व सांसद डॉ. गिरिजा व्यास के सगे भाई हैं। शब्द रंजन की बधाई।

पंकज शर्मा कांग्रेस के प्रदेश सचिव बने

सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में अपनी प्रभावी भूमिका लिए पंकज शर्मा सजग एवं समर्थ युवा हैं। मासिक 'प्रत्यूष' के प्रकाशन से इनकी साख में वृद्धि हुई है। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के परम विश्वसनीय माने जाने वाले पंकज को प्रदेश कांग्रेस के सचिव बनाये जाने पर उन्हें हार्दिक बधाई। आशा है वे अपने नाम के अनुरूप नया गुल खिलायेंगे।

अयोध्याप्रसाद 'कुमुद' उदयपुर में

बुंदेलखंड के साहित्य, इतिहास तथा लोकविधाओं के यशस्वी लेखक अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' ने अपने उदयपुर प्रवास में डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। वे यहां अम्बावगढ़ स्थित सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र में देशभर के विविध अंचलों में निवास कर रहे शिक्षकों की ज्ञानशाला में आदिवासी लोकधर्मिता से जुड़े विषयों पर व्याख्यान देने आये थे। इस दौरान 6 फरवरी को उन्होंने डॉ. भानावत से भेंट कर भारतीय संदर्भ में विविध विश्वविद्यालयों में हो रहे लोकसाहित्य, संस्कृति, कला एवं जनजातिपरक शोधकार्यों पर विस्तृत चर्चा की। दोनों ने अपने द्वारा प्रकाशित साहित्य का आदान-प्रदान किया। डॉ. भानावत से उनका लेखन-परिचय तो बहुत पुराना है किंतु व्यक्तिश: भेंट का पहला ही संयोग था।

'शब्द-रंजन' प्रकाशन पर शुभकामनाएं

'शब्द-रंजन' को देखकर खुशी हुई। पढ़ने के बाद खुशी का ठिकाना नहीं रहा। शब्द-रंजन की यात्रा की शुरूआत पर 'पीछोला' पाक्षिक की याद ताजा हो गई। मुझे उम्मीद है आप 'शब्द-रंजन' को साहित्य, कला एवं संस्कृति का प्रतिनिधि पत्र बनायेंगे। साथ में राजनीति का तड़का भी चलेगा। 'शब्द-रंजन' के लिए मेरी ढेरों बधाइयां और शुभकामनाएं।

-कमर मेवाड़ी

साहित्य की नींव पर कानून का जनजागरण

जबलपुर निवासी सुधारानी श्रीवास्तव की लिखी 'तितली' नामक पहली रचना सन् 1942 में इलाहाबाद से प्रकाशित 'बालसखा' मे छपी। उसके बाद देश की सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में वे लिखती रहीं। सन् 70-80 के दशक में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कवि सम्मेलनों में काका हाथरसी, के.पी. सक्सेना, बालकवि बैरागी, अशोक चक्रधर, माया गोविंद, निर्भय हाथरसी तथा प्रभा ठाकुर के साथ काव्य पाठ कर मुखरता पाई। वकील का खोपड़ा, दिमाग में बकरा युद्ध, दिमाग के पांव तथा दिमाग की खुराफात नाम से उनके व्यंग्य संग्रह बड़े चर्चित हुए।

उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य महिला जन जागरण तथा उनके हकहकूक के लिए एक अधिवक्ता के रूप में लेखन तथा सर्वोच्च न्यायालय तक उनकी पैरवी का रहा। मानव अधिकार, उपभोक्ता संरक्षण, महिला उत्पीड़न आदि को लेकर उन्होंने पुस्तकें लिखीं। कानून पर हाल ही में उनकी मानवाधिकार एक अध्ययन पुस्तक प्रकाशित हुई। उनकी तीनों पुत्रियों रागिनी, मधुलिका तथा अंजली ने इसका लोकार्पण करवाया और हमें लिखा- बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी हमारी माताजी ने साहित्य और विधि की समन्वित धारा प्रवाहित की। प्रौढ़ शिक्षा और मानवाधिकार को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर उन्होंने महिलाओं में विधि चेतना जागृत करने के साथ ही साहित्य की नींव पर कानून को हास्य के माध्यम से जन जागरण तक पहुंचाने का भगीरथ प्रयत्न किया।

-रामधुअं

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 फरवरी 2016

ग्रेस में पड़ी कांग्रेस बनी फ्रेश

राजनीति एक चलाचली का, हाताहूती का खेल है। सदैव ऊंट पर सवार राजनीति कब किस करवट हो जाय, यह शायद ऊंट भी नहीं कह सकता। यों लोकतंत्र में राजनीति जनता के कंधों पर होकर सत्तासीन होती है पर धीरे-धीरे जब प्रभुत्व में आती है तो वह लोक की लीक छोड़ती हुई तंत्र के तानेबाने में गठती हुई नजर आती है।

कभी राजस्थान की राजनीति का मंगल मेवाड़ हुआ करता था। धीरे-धीरे यह मंगल दंगल की शरण लेता गया और कई रंगों की हार-बहार लेता नील रंगी बन गया। नीला रंग कोई खास पहचान और प्रभुत्व वाला नहीं होता। उसकी आंख में समतामूलक समदर्शी भाव भी नहीं होता। फलस्वरूप उसका आकर्षण विकर्षण रूप धारण करता अपनी आभा भी खो बैठता है।

गत दस वर्षों से यही कुछ मेवाड़ में, कांग्रेस का हाल रहा। सुध कौन ले। पुरानी अंगीठी में जलते कोयले को हवा दे या अंगीठी की पुरातनता का लिहाज रखे। आ बैल मुझे मार की धार में सब सुस्ताते रहे। कोई बांग भी देता पर उसकी जबान बंद ही रही। कभी कुछ लपलपाई भी तो किसी ने नहीं सुनी। हाथ पर हाथ धरे, बैठे ठाले, एकला चना, भाड़ में जाये जैसी निसरनी के पाये पर कौन चढ़े, चढ़कर नाले, फिर मिले क्या।

एक अजीब उधेड़बुन में आ गई कांग्रेस। बचपन में सुनी कहानी याद आ गई। एक चूहा टोपी लगाकर राजा के दरबार गया। बोला- मेरी टोपी जैसी रावजी के भी नहीं। अधिक बकवास करने पर रावजी ने उसकी टोपी छीन ली। चूहा बोला- रावजी मंगते जो मेरी टोपी छीन ली। यह सुन रावजी ने टोपी लौटा दी तो चूहा उछला। बोला- रावजी डर गये सो मेरी टोपी लौटा दी।

टोपी सब ओर स्वच्छंद हो उछलती रही। कोई कृष्ण तो था नहीं। अब जाकर गोपी समूह पर गोपजी आये हैं। ये गोपजी कृष्णावतारी हैं सो फिर से कांग्रेस के भाग चेत जायेंगे। अचानक रोटी उछल उस पाले में चली गई जहां लोग परिवर्तन चाहते थे। जो नहीं चाहते थे वे भी मंद स्वर में कह रहे हैं- अच्छा हुआ चलो, ग्रेस से फ्रेश तो हुई कांग्रेस।

पुलिस जवानों...

(पृष्ठ एक का शेष)

तालाब में पर्याप्त पानी उपलब्ध नहीं होने से ग्रामीणों को पानी के मामले में समस्याएं घेरने लगीं। क्षेत्रवासी लम्बे समय से चाह रहे थे कि उनके गांव का यह तालाब फिर से आबाद हो जाए ताकि बरसाती पानी लम्बे समय तक ठहरा रहे और ग्रामीणों तथा मवेशियों के लिए पेयजल, सिंचाई आदि गतिविधियों के उपयोग में आता रहे। मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान इन ग्रामीणों के लिए वरदान साबित हुआ जबकि इस अभियान के अन्तर्गत पुलिस प्रशासन ने इस काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया और पुलिस के जवानों ने श्रमदान की शुरूआत की।

कलड़वास की...

(पृष्ठ छह का शेष)

चुनौतियों को सामना करना पड़ा। तुलसी ने अपनी कौशलता से महिलाओं को समूह में बांटा और प्रत्येक समूह की महिलाओं को अपनी पसंद के अनुसार अलग-अलग कार्य करने को कहा गया। किसी ने नए-नए साँचें तैयार किये, मोम पिघलाये तथा किसी ने पैकेजिंग का कार्य किये। यह एक सपने के सच होने जैसा था। सभी भावुक हो गई जब उनको इस कठिन परिश्रम का मानदेय दिया गया। तुलसी भी रो पड़ी। यह उसके लिए एक सपना सच होने जैसा था। सिखाने की व्यवस्था तथा इनाम के रूप में नकद मानदेय वास्तव में बहुत ही प्रोत्साहित था। सखी उन सभी ग्रामीण महिलाओं के लिए आशा है जो अपने सपने और इरादों को पूरा करने की इच्छा रखती हैं।

महाराणा मेवाड़....

(पृष्ठ छह का शेष)

विद्यालय, सुश्री निकीता चौधरी केन्द्रीय विद्यालय एकलिंग गढ़ - 2,। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा आयोजित उच्च माध्यमिक परीक्षा में विज्ञान संकाय में कुलदीपसिंह नरूका एवं सुश्री गर्विता शर्मा शिशु भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय से.-5, साहिल सारस्वत हेप्पी होम उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुश्री चारूल मेहता एवं अर्जुन धाकड़ गुरु नानक पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय से.-4,। वाणिज्य संकाय में सुश्री हर्षिता नलवाया ज्ञानमंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय से.-4, सुश्री गरिमा नागदा, राजस्थान महिला गेलडा उच्च माध्यमिक विद्यालय, कला संकाय में सुश्री तुलसी गिरी व सुश्री पूजा गमेती राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय से.-4,। माध्यमिक परीक्षा में हर्ष परिहार ज्ञान मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय से.-4, युवराज डाँगी, सुश्री तरुणा देवड़ा, सुश्री कालिन्दी जोशी एवं केवल जोशी गुरु नानक पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, से.-4, सुश्री उमा खरवड़, ज्योति उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहपुरा। खेल-कूद/सहशैक्षिक एवं शैक्षणेत्तर गतिविधियों में सुश्री नेहल आंचलिया, सुश्री नेहा कुमावत, सेंट मेरीज कॉन्वेंट उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुश्री मदनी शिफा खान सेन्ट्रल अकादमी उच्च माध्यमिक विद्यालय सरदारपुरा, सुश्री योषिता व्यास सेंट मेरीज कॉन्वेंट माध्यमिक विद्यालय तीतरड़ी, रवि राठौड़ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भटियानि चौहट्टा, कृष्णा वैष्णव एवं सुश्री प्रेक्षा नागर, अभिनव उच्च माध्यमिक विद्यालय। **महाराणा फतह सिंह विशिष्ट सम्मान :** सुश्री चित्रांगी दशोरा, सेंट पोल्स उच्च माध्यमिक विद्यालय भूपालपुरा, सुश्री उदितआंशु राणावत सेन्ट्रल अकादमी उच्च माध्यमिक विद्यालय सरदारपुरा, हर्षवर्धन सिंह राणावत, महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल।

पोथीखाना

अपने को टटोलने वाली कविताएं

डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी राजस्थानी के ऊंडे-गहरे कवि हैं। उन्होंने अपनी कविता में समुद्र की गहराई से नहीं अपितु रेत के खेतों में आभा देती उजास रोशनी की डोर के दूरबीन से झांका है। रेगिस्तान की उत्ताल आंधियों के रहते वे तनिक भी अपना आपा खोते डगपच नहीं हुए हैं और न कविता को उलझनित होने दिया है। प्रकृति और पुरूष की सत्ता महत्ता में कविता ही वह जिजीविषा है जो चेतना के धरातल पर मनुष्य को मनुष्य बनाये उसके पारदर्शी मन को मलीन होने से बचाती है।

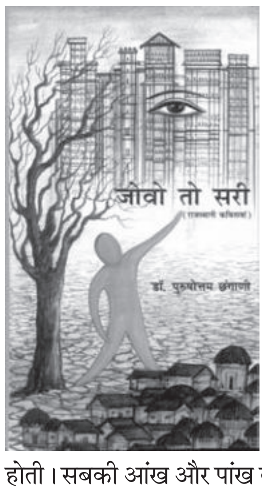

सब कवियों की कविता के प्रति धारणा एक जैसी नहीं होती। सबकी आंख और पांख का विस्तार भी एक जैसा नपातुला नहीं होता। सब देखते हैं पर एक जैसी दृष्टि से नहीं। कवि छंगाणी की दृष्टि में कविता कोई मौज शौक की पूंपाड़ी नहीं जो जब मन चाहे बजाई जाती रहे। उसे बजाने के पहले 'जोवो तो सरी' कविता को और उसके अन्तर्मन की अंखड़ली को परखो तो सही।

डॉ. छंगाणी की दृष्टि में कविता है तो मनुष्य है। मनुष्य है तो उसकी सत्ता है और सत्ता है तो सार्थक जीवन चेतना है। इसी से समाज का बनावटीपन दूर होगा और मनुजता का सहज कुदरती भाव पनप सकेगा।

पुस्तक में कुल 32 कविताएं हैं जो अपने में परिपूर्ण हैं जैसे मनुष्य के मुंह में बत्तीसी होती है, बत्तीस दांतों वाली। इसी बत्तीसी से होता आहार उसके शरीर में पहुंचता है। स्वास्थ्य वेत्ता कहते हैं कि खाना खूब चबा-चबाकर खाना चाहिए। अच्छा हो यदि एक कौर को बत्तीसबार चबाया जाय। ऐसा करने वाला कभी बीमार नहीं पड़ेगा। डॉ. छंगाणी भी अपनी कविताओं के माध्यम से यही संदेश देते प्रतीत होते हैं कि मनुष्य सदैव अच्छा बना रहे। अच्छा बनने के लिए वह सदैव अपने को जोता रहे, टटोलता रहे। कविता करता रहे। सुनाता रहे। सुनता रहे।

बिन पोथी सब सून

उदयपुर की साहित्य संस्कृति और विचार संवाद की संस्था युगधारा द्वारा प्रकाशित जुग जाजम राजस्थानी रचनाकारों का संदर्भ कोष है। संस्था के रजत वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इसका प्रकाशन स्वागत योग्य है। इसमें 342 तो वे रचनाकार हैं जिनकी रचनाएं अथवा उनके द्वारा रचित रचनांश उनके परिचय सहित प्रकाशित हैं जो एक अथवा दो पृष्ठ से अधिक नहीं है। इसके अलावा पोथी के बीच-बीच 91 रचनाकारों का केवल परिचय दिया गया है। कुल 488 पृष्ठों की यह पोथी युगधारा के संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज की परिकल्पना और निर्देशन तथा डॉ. नीता कोठारी के परिश्रमपूर्ण संपादन का कमाल है। इसका मोल 600 रूपया है।

न जाने कितने पापड़ बेलते

न जाने कितने पापड़ बेलते कोई जीवन पूर्णता के लिए कुछ कर पाता है। 'संसार को बदलो' पुस्तक के उद्‌बोधक शांतिचंद्र मेहता ने अपने जीवन के कई पड़ाव देखे पर कहीं विराम नहीं लिया। कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन, कई धर्म-संस्थानों का सहकार, कई संत-सतियों का सान्निध्य और जैनधर्म के सिद्धांतों-सरोकारों में तपते जो कुंदन उन्होंने निखारा वह इस पुस्तक में संकलित है। कुल 61 आलेख 122 पृष्ठों में संयोजित हैं। शरदचंद मेहता द्वारा संपादित इस पुस्तक का मोल 40 रूपये है।

मन मंदिर में सत्य की रोशनी

साहित्य की विविध विधाओं में प्रवचन साहित्य को स्थापित करने में जैन विद्वानों, संतों, मनीषियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। इस साहित्य में आत्मा, परमात्मा, मन, चित्त, पूर्वजन्म, पुनर्जन्म, चेतना, आसक्ति जैसे गूढ़ विषयों के तत्वों पर कई दृष्टियों से विश्लेषण तथा सैद्धांतिक विवेचन मिलता है। इस दृष्टि से गणाधीश मणिप्रभसागर के प्रवचनों की दो पुस्तिकाएं 'चार प्रवचन' तथा 'प्रवचन के सात सोपान' उल्लेखनीय हैं। ये प्रवचन मनुष्य को श्रेष्ठतर बनाने के जीवन सिद्धांतों को निरूपित करने के मणिकांचन हैं। श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाजमंदिर, मांडवला-343042 से प्रकाशित इनका मूल भी मात्र 20 तथा 40 रूपया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति इनका लाभ ले सके।

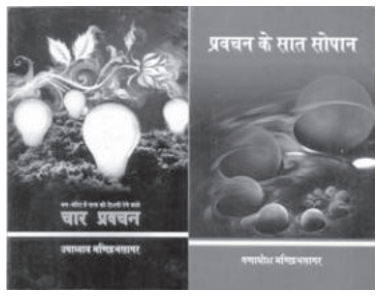

सृष्टि संज्ञाता अजूबे आदिवासी

आदिवासी कहीं के हों, अपने प्रकृतिजनित सृष्टि के सर्वाधिक ज्ञानसंपदा के जानकार तथा संरक्षितमन के खजाने हैं। डॉ. नरेन्द्र एन. व्यास राजस्थान के आदिवासी जनजीवन, उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक सरोकार तथा जीवनधर्मिता के गहन अध्येता, अन्वेषक एवं अनुपम चितेरे हैं। राजस्थान सरकार द्वारा प्रारंभ किये गए आदिवासी शोध संस्थान के प्रारंभिक दौर के लगभग तीन दशक तक निदेशक रहे डॉ. व्यास ने भील, सहरिया, गरासिया, कथौड़ी आदि पर पर्याप्त रूप से प्रामाणिक लेखन किया है। संस्थान के माध्यम से उन्होंने ट्राइब पत्रिका का शुभारंभ भी किया। हिमांशु पब्लिकेशन उदयपुर से पिछले दिनों उनकी अंग्रेजी में दो पुस्तकें 'द सहरिया' तथा 'नोमेडिक लाइफ एण्ड ट्राइबल कल्चर' प्रकाशित हुई हैं। क्रमश: 60-70 पृष्ठों की प्रति पुस्तक की कीमत 295 रूपया है।

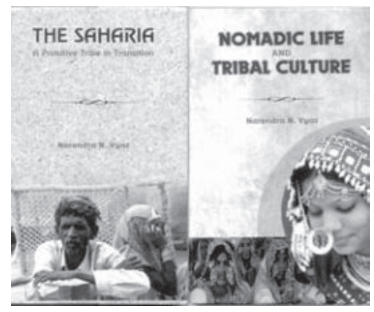

ओस नहायी ताजगी का अहसास देती कविताएं

'ये मेरे कामकाजी शब्द' की कविताएं एक ऐसे संश्लिष्ट काव्यानुभव की कविताएं हैं जिनमें उत्तर-आधुनिकता के नाम पर रागात्मकता की अवहेलना और विचारात्मकता का अतिरिक्त आग्रह नहीं है। जीवन की द्वन्द्वात्मकता, प्रकृति से आत्मीय संवाद और निश्छल भाव-संवेदना ऋतुपर्ण की कविताओं की ताकत है। सायास रचे गये बिम्बों की उलझन इन कविताओं में नहीं है और जो बिम्ब हैं वे रोजमर्रे के होने के बावजूद अपनेआप में ओस नहायी ताजगी का अहसास देते हैं। शिल्प के कई अनूठे प्रयोग इस अकेले कविता संग्रह में फैले हैं। कहीं विचार का विस्तार है तो कहीं पतझर के बहाने छोटे-छोटे दृश्य-बिम्ब बहुआयामी कोलाज रचते हैं। सुरेश ऋतुपर्ण की कुछ कविताएं इस प्रकार हैं-

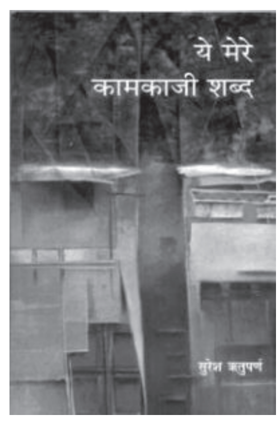

(1) भयभीत : पतझर के डर हो गई पीली पत्ती अंजीर की

(2) वैधव्य : इधर-उधर बिखरी पीली पत्तियों की मुरी हुई चूड़ियां... !!!
-किसका पति मर गया है आज ?

(3) आंख मिचोली : धूप संग खेलती आंख-मिचोली इचो की पत्ती पीली।

(4) आगत पतिका : शिशिर को देख पास लाज से हुई मोमीजी लाल।

(5) अनुगामिनी : हवा ने छुआ भर सिहर संग चली साकुरा की कली।

(6) अलविदा : हवा में तिरतीं असंख्य तितलियां हाय ! साकुरा !!

(7) अमर साकुरा : स्मृतियों में रहेगा अमर साकुरा नश्वर।

-लगछू

लेकसिटी की अभिनव पहल

रोटरी क्लब डिस्ट्रिक्ट द्वारा जून तक एक हजार लोगों को नि:शुल्क कृत्रिम हाथ लगाने का लक्ष्य

जरूरतमन्दों को हरसंभव प्रोत्साहन एवं मदद मानवता की सेवा के वे अनुष्ठान हैं जो औरों को जीवन जीने का सुकून देने के साथ ही सेवा प्रदाताओं को आत्मतोष का अहसास भी कराते हैं। इस दृष्टि से राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र भी सेवा, परोपकार एवं सामुदायिक विकास की गतिविधियों में पीछे नहीं है। खासकर शारीरिक दृष्टि से किसी न किसी प्रकार की आवश्यकता वाले लोगों को सामान्य जीवनयापन प्रदान करने के लिहाज से मेवाड़ क्षेत्र में सेवाभावी संस्थाओं का लम्बा इतिहास रहा है। इसी श्रृंखला में रोटरी क्लब उदयपुर एलीट ने कृत्रिम हाथ लगाने का अनूठा प्रकल्प हाथ में लिया है। राजस्थान में अपनी तरह का यह पहला प्रयास है।

दुर्घटनाओं में हाथ और हथेलियां गँवा देने वाले लोग जिन्दगी भर बेहाथ रहकर अभिशप्त जीवन जीने को विवश हो जाते हैं और हाथों से होने वाले काम नहीं कर पाने की मजबूरी जीवन भर सताए रखती है। इन लोगों की पीड़ाओं को रोटरी क्लब ने समझा और मौजूदा वर्ष के अपने मिशन 'बी ए गिफ्ट टू द वर्ल्ड' को साकार करने के लिए अपनी सामाजिक सेवाओं के अन्तर्गत नि:शुल्क कृत्रिम हाथ लगाने के लिए 'संबल' कार्यक्रम हाथ में लिया। इसके अन्तर्गत रोटरी क्लब डिस्ट्रिक्ट 3040 एवं 3042 द्वारा इस वर्ष जून तक एक हजार लोगों को नि:शुल्क कृत्रिम हाथ से लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। अब तक 400 से अधिक लोगों को लाभान्वित किया जा चुका है। अपनी तरह के इस विशिष्ट प्रकल्प के अंतर्गत कोहनी के नीचे कटे हाथ वाले दिव्यांग महिलाओं-पुरुषों-बच्चों को अमेरिका के एनल मीडोज प्रोस्थेटिक हेन्ड फाउण्डेशन द्वारा निर्मित उच्च क्वालिटी के कृत्रिम हाथ नि:शुल्क लगाए जाते हैं।

कई खासियतों भरा है कृत्रिम हाथ :

वैश्विक स्तर वाला तथा उच्चतम गुणवत्ता मानदण्डों पर खर उतरने वाला यह कृत्रिम हाथ लगाने-निकालने में अत्यन्त सहज एवं सरल तथा मजबूत, टिकाऊ एवं बहुपयोगी हैं इससे 10-12 किलो का वजन आसानी से उठाया जा सकता है। इसकी तीन उंगलियां स्थाई हैं जबकि दो उंगलियां

हिलाई जा सकती हैं। लगभग 400 ग्राम वजन वाले इस कृत्रिम हाथ से लगातार साइकिल, मोटर साइकिल भी चलाई जा सकती है। इस हाथ को लगाने के लिए कोहनी के नीचे कम से कम 4-5 इंच मूल हाथ का हिस्सा होना जरूरी है। एक कृत्रिम हाथ की कीमत 60 हजार रुपए से लेकर 2 लाख तक है जिसे नि:शुल्क लगाया जा रहा है।

उदयपुर में होगा शिविर :

इस दिशा में रोटरी क्लब उदयपुर एलीट के अध्यक्ष मनीष गलुण्डिया बताते हैं कि क्लब ने अपनी ओर से पहल करते हुए दिव्यांग व्यक्तियों की सेवा के लिए यह सेवा कार्य शुरू किया है। इसके अन्तर्गत आगामी 9 व 10 अप्रेल को उदयपुर में हाथ प्रत्यारोपण शिविर लगाया जाएगा। इसमें मध्यप्रदेश के इन्दौर से आने वाली विशेषज्ञों की टीम हाथ प्रत्यारोपण करेगी। इसके लिए इन्दौर से दस विशेषज्ञ तकनीशियनों की टीम आएगी जो कृत्रिम हाथ लगाने के साथ ही इसके परिचालन का प्रशिक्षण भी देगी। इस शिविर के लिए एक मार्च तक 2016 तक पंजीकरण जारी है। इस शिविर में कम से कम 250 लोगों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है।

जरूरतमन्द व्यक्तियों को इस कृत्रिम हाथ प्रत्यारोपण की नि:शुल्क सुविधा उपलब्ध कराने के लिए ऐसे व्यक्तियों का नाम, पते व मोबाइल नंबर सहित पूरा विवरण उदयपुर के उदियापोल स्थित रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर एलीट, होटल गोरबंध को भिजवाया जा सकता है। इसके साथ ही एक फोटो भी भिजवाया जाना चाहिए जिसमें संबंधित व्यक्ति का कटा हुआ हाथ भी साफ-साफ दिखाई दे रहा हो।

राजस्थान में पहली बार हो रहे इस प्रयास को खूब सराहना भी मिली है और शिविर का लाभ पाने वाले लोगों में व्यापक उत्सुकता भी देखी जा रही है। विभिन्न प्रचार माध्यमों के साथ ही व्हाट्सएप व फेसबुक के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार जारी है और इसका यह असर हुआ कि अब तक डेढ़ सौ से अधिक लोगों ने कृत्रिम हाथ लगवाने के लिए पंजीकरण करवा लिया है। इनमें न केवल उदयपुर संभाग बल्कि राजस्थान के विभिन्न जिलों, उत्तरप्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों के लोग भी शमिल हैं। कई लोग ऐसे भी हैं जो कोहनी से नीचे के अपने दोनों हाथ गँवा चुके हैं। रोटरी क्लब का यह प्रयास मानवता की सेवा का स्वर्णिम अध्याय रचेगा और इससे पीड़ित मानवता की सेवा का पैगाम अन्यों को भी प्रेरित करेगा। यह सेवा कार्य उन लोगों की जिन्दगी को सुकून देगा जो अब तक हाथ नहीं होने की वजह से सामान्य काम-काज भी नहीं कर पा रहे हैं।

- डॉ. दीपक आचार्य

'मेक इन इंडिया' के तहत महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन की ऐतिहासिक पहल

विरासत संरक्षण के क्षेत्र में संग-संग काम करेंगे मेवाड़ और फ्रांस

उदयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की देश-विदेशव्यापी परियोजना 'मेक इन इंडिया' के तहत फ्रांस एवं उदयपुर के मध्य पर्यटन, विरासत संरक्षण, शिक्षा, इतिहास, शोध, शिल्प कला एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे बहुउद्देशीय योजनाओं के तहत महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर एवं फ्रांस की संस्था नेशनल डोमेन ऑफ शीमोड ने कार्यकलाप शुरू किया है।

सोमवार को फ्रांस से यहां उदयपुर पहुंचे नेशनल डोमेन ऑफ शीमोड के जनरल डायरेक्टर जीन डी' हौसनविल एवं मिशन के इंचार्ज मरीयन ह्यूग्स ने फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ से भेंट की एवं सिटी पैलेस का भ्रमण किया।

फाउण्डेशन की इकाई जॉइंट कस्टडियन इनिशिएटिव की मुख्य कार्यकारी अधिकारी वृंदाराजे सिंह ने बताया कि फाउण्डेशन के अधीन संचालित सिटी पैलेस म्यूजियम एवं इसकी अन्य ऐतिहासिक पर्यटन इकाई पर दोनों संस्थाएं अध्ययन करेंगी एवं मेवाड़ की लोककला, वास्तुकला, शिल्प कारीगरी, पारंपरिक परिधान, रंग, त्यौहार, खान-पान, शोध कार्य के साथ विरासत संरक्षण पर रिपोर्ट तैयार करेंगी। फाउण्डेशन फ्रांस में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं योजनाओं का अध्ययन कर यहां पर उनकी उपयोगिता एवं मेवाड़ में होने वाले कार्यक्रमों एवं शोध कार्यो की फ्रांस में उपयोगिता के लिए एक मंच का कार्य करेगा।

इस संबंध में पूर्व में हुए समझौते के तहत आगामी समय में फ्रांस से पर्यटन, शिक्षा, पर्यावरण, झील, खेल, कला के क्षेत्र में कार्य कर रहे विषय विशेषज्ञ यहां उदयपुर आएंगे और यहां के चयनित प्रतिनिधि फ्रांस जाकर शोध करेंगे। सोमवार को सिटी पैलेस भ्रमण के दौरान फ्रांस के दोनो अतिथियों ने फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी अरविन्द सिंह मेवाड़ सहित फाउण्डेशन के अधिकारियों से भी भेंट की।

चिकित्सा परामर्श एवं जांच शिविर 14 को

उदयपुर। पेसिफिक मेडीकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल एवं सेवा भारती चिकित्सालय के सयुक्त तत्वावधान में 14 फरवरी प्रात: 9 से 3 बजे तक नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श एवं जाँच शिविर का आयोजन सेवा भारती चिकित्सालय हरिदास जी की मगरी मल्लाहतलाई में किया जाऐगा।

इस षिविर में पीएमसीएच के फिजिशियन डॉ बी.एस बम्ब, सर्जन डॉ के.सी.व्यास, हृदय रोग विषेषज्ञ डॉ जे.सी.शर्मा, आर्थोस्कोपिक सर्जन डॉ आर.एन लड्ढा, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ राजरानी शर्मा, न्यूरो फिजिशियन डॉ अतुलाभ वाजपेयी, नाक कान गला विशेषज्ञ डॉ पी.सी.अजमेरा, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ रवि भाटिया, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. रचना एवं दन्त रोग विशेषज्ञ डॉ राहुल आमेटा मरीजों को नि:शुल्क चिकित्सीय परामर्श देगें।

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. पूनम दईया एवं उनकी पत्नी कृष्णा की स्मृति में समारोह आयोजित

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि छात्र अपने जीवन में आने वाली हर बाधा को पार कर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे तो वे अपने जीवन में कभी असफल नहीं होंगे। आवश्यकता निष्ठा, ईमानादारी एवं लगन के साथ आगे बढ़ने की है। डॉ. पूनम कृष्णा दईया ट्रस्ट के डॉ. सुनील दईया ने कहा कि ट्रस्ट प्रतिवर्ष जरूरतमंद एवं आर्थिक रूप से कमजोर विद्यापीठ विवि के छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन देने हेतु यह फेलोशीप 2011 से निरंतर दी जा रही है।

कान्यो-मान्यो-चान्यो की चहलकदमी

कान्यो मान्यो दोनों एक प्राण दो शरीर, दांत कटे रोटी थे। मसखरे तो थे ही। जब भी मिलते, मसखरी की मालिश उनके शरीर को गठीला किये रहती। कान्यो बोला, रे मान्यो, मैंने आशु कवि होना तो सुना पर ये आशु लेखक क्या होता है ? मान्यो तपाक से आधी रोटी दाल लिए मुंह खोल लपलपाया, आजादी से पहले आशु कवि ही हुआ करते थे। यह आशु लेखक बाद की नस्ल नई पनपी है। यह लेखक लिखने वाला जीव नहीं है। जैसे व्यापार में कमीशन एजेंट होता है वैसे ही साहित्य में आशु लेखक होता है।

आशु लेखक हर समय लेखक की तरह तरवरी लिए रहता है। वह कई लेखकों का सत्व लिए अपनत्व देता मिलता है। वह 'या मुरली, मुरलीधर की, अधरा न धरी, अधरा न धरौंगी' जैसी अडिग समझदारी की बजाय मौका पड़ने पर वही मुरली, मुरलीधर, अधर तथा अधरा बन हरबोला की तरह सबको चकित भ्रमित किये रहता है। कोई कार्य लेखक से जुड़ा हो, वह फटाफट निपटा देगा। जाजम बिछाने से लेकर जाजम उठाने के बीच के सारे आयोजन करता लेखकों की जमात थामे उसकी जो पैठ है वही उसे आशु लेखक के नाम से चर्चित किये है।

कान्यो सुनता रहा गुन्नाबन फिर अपनी जीरो नंबर की मूंछ फड़काकर बोला, जब लिखता नहीं तो हर जगह साहित्यिकों की जमात में आगेवाण कैसे बना छाया रहता है। सर्वाधिक मान-सम्मान भी उसी की खोली में देखे जाते हैं। मान्यो उछलता मुकलाता बोला, वह महान गुन्ताड़ेबाज और जबर्दस्त तिकड़मबाज होता है, पक्षियों में बाज की तरह। बड़े-बड़े सांचे लेखक भी इसके सांचे में फिट होना चाहते हैं। वे सोचते हैं, जब बिना लिखे ही महान लेखक हो जाते हैं तब लिखकर, काले कागज करने से क्या लाभ !

कान्यो मान्यो दोनों नजदीक आये। धीरे से कानाफूसी करने लगे, बिचारे मोटे लेखक जिंदगी भर लिखते रहे फाकामस्ती में। उन्हें तो कुछ मिला नहीं, हां सुना कि उनके बेटे अवश्य मरोड़पति हो गये।

तो निष्कर्ष यह अच्छा कि ऐसे आशु लेखक से तो जेनुईन लेखक ज्यादा ठीक होता है। जिनके बेटों-पोतों को उनके लेखे का फल मिलता है। गीता का श्लोक याद रखो, वहां फल नहीं है, पर फल का हल निकाल लो, पुण्य की जड़ हरी होती है। जो हरी होती है वह खरी होती है।

दोनों की मुद्रा को लापालोर स्थिति में देख चान्यो टपका। बोला- सब ध्यान से सुन रहा था। दीवालों के भी कान होते हैं। ऐसी दीवालें पालो जो गंडक की पूंछ की तरह पीछे-पीछे ओलूं दोलूं घूमती सबकुछ कह दें। आजकल एक और लेखक उग आया है। वह है भूमिका लेखक।

कान्यो मान्यो का भूत उतर गया। बोले, सो कैसे ? चान्यो ने उनकी पीठ पर अपने दोनों हाथ रखे और तसल्ली की सांस लेते बोला, एक उम्र के बाद खटिया खड़ी हो जाती है जो घर में अब तक पड़ी रहती है। साहित्य देवता उस पर बिराजमान हो जाते हैं तो उनकी कल्पना कुरेदी नहीं जाती तब वे दूसरों की पुस्तकों की माथा, मोड़बंधाई की पुरोहिताई करते हैं। बोलते भी हैं, पूछने पर कि आजकल क्या कर रहे हैं ? धांसते-खांसते उत्तर मिलता है-भूमिकाएं लिख रहा हूं।

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन का सम्मान समारोह 6 मार्च को

भामाशाह, राजसिंह तथा फतहसिंह अलंकरणों की घोषणा

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर द्वारा 6 मार्च को आयोजित 34वें महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन वार्षिक अलंकरण समारोह के लिए वर्ष 2015 के 14 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इसके तहत 7001 रू. की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी। महाराणा राजसिंह अलंकरण के लिए 13 विद्यार्थियों को 5001/- रु. की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी। इसी तरह महाराणा फतहसिंह अलंकरण के तहत 48 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को 2501 रू. की सम्मान राशि दी जाएगी।

भामाशाह अलंकरण

बी.कॉम. में सुश्री नम्रता अग्रवाल, श्री श्याम महाविद्यालय गुड़ा गौड़जी का, झुनझुनू, बी.एससी. में श्री बालू राम सैनी, एस.पी.आर. चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, बी.एससी. (कृषि) में सुश्री अनमोल चुघ, परमानंद उपाधि महाविद्यालय गजसिंहपुर, बी.एससी. (गृहविज्ञान) में सुश्री निधि कोठारी, गृहविज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर, बी.एफ.एससी. (मात्सयकी विज्ञान) में सुश्री ज्योति माटोलिया, मात्सयकी महाविद्यालय, उदयपुर, बी.एड.-शिक्षा शास्त्री में सुश्री पूजा व्यास, निर्म्बार्क शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर, बी.एड. में सुश्री स्वीटी पालीवाल, एल.एम. शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय डबोक, उदयपुर, बी.बी.एम. में सुश्री मोनिका बजाज, पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनस स्टडीज, उदयपुर, बी.डी.एस. में डॉ. गुलनाज़ हकीम, पेसिफिक डेंटल कॉलेज व हॉस्पीटल, उदयपुर, बी.ई. (सीविल) में श्री प्रगणेश पाहुजा, बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी, बी.टेक. (डेयरी टेक्नॉलोजी) में सुश्री अपूर्वा शर्मा, डेयरी एवं खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, उदयपुर, बी.टेक. में सुश्री सौम्या नारंग, मुकेश पटेल स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी मेनेजमेंट एंड इंजीनियरिंग, सी.ए. में सुश्री कोमल अग्रवाल, दी इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इण्डिया, सी.एस. में सुश्री निकिता माहेश्वरी, दी इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनीज़ सेक्रेट्रीज़ ऑफ इण्डिया।

34th MMFAA 2016

महाराणा राजसिंह अलंकरण

खेलकूद में सुश्री भावना जाट, भूपाल नोबल्स पी.जी. कन्या महाविद्यालय, सुश्री प्रतीति व्यास, वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन महाविद्यालय, बलवन्त चौधरी, एवं विनोद मेनारिया भूपाल नोबल्स महाविद्यालय, जितेन्द्र डाँगी एवं शशांक जोशी, विद्या भवन रूलर्स इंस्टीट्यूट। सहशैक्षिक एवं शैक्षणेत्तार गतिविधियों में मोहम्मद वसीम शेख, कला महाविद्यालय, सुश्री आशा शर्मा, सुश्री डॉली झाला एवं सुश्री निहारिका शक्तावत भूपाल नोबल्स पी.जी. कन्या महाविद्यालय, राहुल दशोरा समाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, हेरम्ब जोशी विज्ञान महाविद्यालय, सुश्री अर्पिता आचार्य, विधि महाविद्यालय।

महाराणा फतह सिंह सम्मान

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक परीक्षा में विज्ञान संकाय में राघवेन्द्रसिंह चौहान एवं सुश्री अपूर्वा भारद्वाज, महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल, सुदीप अग्रवाल एवं आकाश जैन सेंट एन्थोनी उच्च माध्यमिक विद्यालय, , सुश्री चारवी नाहर, एम.डी.एस. पब्लिक स्कूल, मुकेश नागर सेन्ट्रल अकादमी उच्च माध्यमिक विद्यालय सरदारपुरा, सुश्री कुलमेहर बसूर सेंट मेरीज कॉन्वेंट उच्च माध्यमिक विद्यालय तितड़ी, उदयपुर। वाणिज्य संकाय में सुश्री सकीना महू वाला दि स्टडी बड़ी, सुश्री शुचिता जैन सेंट एन्थोनी उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुश्री रूचिका बाफना सेंट ग्रेगोरियस उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रेयांश अजमेरा, एवं सुश्री नाज़िश बड़ौदावाला सेन्ट्रल अकादमी उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुश्री गार्गी हेडा एम.डी.एस. पब्लिक स्कूल। कला संकाय में आहद सनवारी, सुश्री मनीका दयाल एवं सुश्री निशा चारण महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल, उदयपुर।

अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा में अनुश्रव जैन एवं नतांश हिंगड़ महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल, वित्तेश अरोड़ा सेंट एन्थोनी उच्च माध्यमिक विद्यालय, कीर्ति हड़पावत सेंट पोल्स पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुश्री छवि हरकावत सेंट मेरीज कॉन्वेंट उच्च माध्यमिक विद्यालय, कल्पित वीरवाल, सेंट ग्रेगोरियस उच्च माध्यमिक (शेष पृष्ठ पांच पर)

कलड़वास की 'सखी' तुलसी ने खोला सुगन्धित मोमबत्तियां बनाने का केन्द्र

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की 'सखी परियोजना' ग्रामीण महिलाओं को व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षण दे रही है जिसमें ग्रामीण महिलाओं ने विभिन्न प्रकार की आकृतियों में सुगन्धित मोमबत्तियां बनाने में रूचि दिखाई।

हिन्दुस्तान ज़िंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि राजस्थान में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को सशक्त बनाने के लिए नये व्यावसायिक कौशल सिखाये जा रहे हैं। ग्रामीण महिलाएं रोजगार प्राप्त करने के लिए अपने खाली समय का सद्पयोग कर रही है। राजस्थान में वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान ज़िंक ने 'सखी' परियोजना का शुभारम्भ किया है जिससे ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं को व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षण के माध्यम से उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थित सशक्त हो रही है। वे नियमित आय के लिए उत्पादों की बिक्री के लिए सीधे बाजार से जुड़ी हुई है।

तुलसी एक ऐसी ही महिला है। तुलसी उदयपुर शहर से 15 किलोमीटर दूर एक छोटे से गांव कलड़वास में रहती है। हिन्दुस्तान जिंक ने तुलसी से व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षण के लिए सम्पर्क किया और वह इसके लिए सहमत हो गई तथा अपने अन्य साथियों को प्रशिक्षण के लिए साथ लाने के लिए कही। व्यावसायिक प्रशिक्षण संचालन में मुख्य सड़क से दूर होना तथा आधारभूत सुविधाओं एवं बिजली की कमी मुख्य समस्याएं थी। उन्होंने ऐसे जगह की व्यवस्था की जहां व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा सके तथा जगह उपलब्ध करायी।

आधारभूत सुविधाओं के साथ सुनिश्चित किया गया कि सुगन्धित मोमबत्ती बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जाए तथा प्रशिक्षण के दौरान ही लगभग 2000 मोमबत्तियां बनायी जाए। इन मोमबत्तियों की शीघ्र ही बिक्री की जाएगी। तुलसी ने सहमती एवं वादा किया कि सीखने एवं इस परियोजना के संचालन के लिए और अधिक महिलाएं आएगी।

दो दिनों के भीतर सब कुछ तुलसी द्वारा आयोजित किया गया। हिन्दुस्तान जिंक ने सभी कच्चे माल की व्यवस्था की और तुलसी ने मोम पिघलाने के लिए रसाई गैस, बर्तन और अन्य जरूरत के सामान जो घर में उपलब्ध थे व्यवस्था की। इस प्रकार कलड़वास गांव में 18 ग्रामीण महिलाओं के साथ 2000 मोमबत्तियां बनाने का सखी परियोजना शुरू हुआ। परियोजना प्रारम्भ करते समय तुलसी और उसके दोस्तों को कई (शेष पृष्ठ पांच पर)

कृमि मुक्ति दिवस पर समारोह

सांसद अर्जुनलाल मीणा ने पिलायी बच्चों को दवा

उदयपुर, 10 फरवरी। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस पर बुधवार को चिकलवास के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में आयोजित जिलास्तरीय समारोह में उदयपुर के सांसद अर्जुनलाल मीणा एवं गोगुन्दा विधायक प्रतापलाल गमेती ने बच्चों को दवाई पिलायी। इसका आयोजन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, शिक्षा तथा महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किया गया। सांसद ने स्वास्थ्य परीक्षा में विद्यालय स्तर पर प्रथम रहे कैलाश गमेती (छात्र वर्ग) एवं सुश्री रोहित कुंवर (छात्रा वर्ग) को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभागीय योजनाओं का लाभ लेने के साथ ही ग्रामीणों से मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान में समर्पित भागीदारी का आह्वान किया।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव टाक ने कृमि दिवस की गतिविधियों व इसके उद्देश्य पर जानकारी दी। समारोह में जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) विष्णु पानेरी, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी वीरेन्द्र पंचोली एवं प्रवीण मेहता, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ललित आमेटा, रमसा के अधिकारी इकबाल, उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राघवेन्द्र राय, यूएन पॉपुलेशन फण्ड के सलाहकार डॉ. एसएम यादव, स्वागत संस्थाप्रधान श्रीमती आशारानी देशमुख एवं शिक्षकों ने किया। संचालन मनोज गंधर्व ने किया। आभार प्रदर्शन सरपंच श्रीमती पन्ना देवी ने किया।

समारोह में क्षेत्रीय सांसद अर्जुनलाल मीणा ने लोक स्वास्थ्य रक्षा की योजनाओं की जानकारी दी और कृमि से मुक्ति दिलाने के लिए जनचेतना और सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया। विधायक प्रतापलाल गमेती ने सेहत रक्षा के लिए संचालित गतिविधियों की सराहना की। सांसद ने स्कूल मैदान के लिए पांच लाख रुपए की घोषणा की।

टीएसपी क्षेत्र में 24 उप स्वास्थ्य केन्द्र के लिए 5 करोड़ स्वीकृत

उदयपुर। जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की ओर से जनजाति उपयोजना क्षेत्र के चार जिलों उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ में 24 उप स्वास्थ्य केन्द्रों की स्वीकृति दी गई है। ये सभी कार्य राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के माध्यम से कराये जाएंगे।

अतिरिक्त आयुक्त (टीएडी) रुक्मणि सिहाग ने बताया कि उदयपुर जिले में 5 उप स्वास्थ्य केन्द्र के लिए 125 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। इसमें सराड़ा के बाणाखुर्द, कोटड़ा के नयावास व समोली, सलूम्बर के बरखड़ी, खेरवाड़ा के चित्तौड़ा के लिए उप स्वास्थ्य केन्द्र की स्वीकृति दी गई है।

प्रतापगढ़ जिले में 7 केन्द्रों के लिए 175 लाख स्वीकृत किए गए है। इनमें प्रतापगढ़ क्षेत्र के खेड़ा नरसिंगमाता, हरनीकुड़ी, पीपलखूंट के चौकी और पाठार, अरनोद के फतहगढ़ थाना साखथली, धरियावद के पिपलिया के लिए उप स्वास्थ्य केन्द्र की स्वीकृति दी गई है।

डूंगरपुर जिले में 5 उप स्वास्थ्य केन्द्रों के लिए 125 लाख की स्वीकृति दी गई हैं। इनमें सीमलवाड़ा के मोरड़ी व लिम्बाड़िया, आसपुर के नादली सागोरा, सागवाड़ा के वणारी, डूंगरपुर के बगदरी के कार्य शामिल हैं।

बांसवाड़ा क्षेत्र में 7 उप स्वास्थ्य केन्द्रों कार्यो के लिए 175 लाख स्वीकृत किए गए हैं। इनमें घाटोल के डूंगरिया, गढ़ी के रैयाना, तलवाड़ा के सामलासेर, छोटी सरवन के डेरी, कुशलगढ़ के बिजलपुर व सारण तथा परतापुर के झड़स का उप स्वास्थ्य केन्द्र शामिल हैं।

सांसद मीणा एवं विधायक गमेती ने बड़गाँव राउमावि में कक्ष कक्षों का लोकार्पण किया

प्रार्थना सभाओं का हॉल बनाने 25 लाख की घोषणा, विधायक बनवाएंगे दो कक्षा कक्ष

उदयपुर। उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा ने शिक्षा को सामाजिक नव निर्माण एवं राष्ट्रीय उत्थान में शिक्षा की भूमिका को अहम बताया है व इस दिशा में समर्पित भागीदारी का आह्वान किया है।

क्षेत्रीय सांसद मीणा ने यह विचार बुधवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़गांव में आयोजित शिलान्यास एवं लोकार्पण समारोह में व्यक्त किये। इस अवसर पर गोगुन्दा विधायक प्रताप गमेती, स्थानीय सरपंच कैलाश शर्मा, शिक्षा उपनिदेशक भरत मेहता, रमसा के मोहम्मद इकबाल सहित क्षेत्र के अन्य जनप्रतिनिधि एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। अतिथियों ने विद्यालय में 4 कक्षा कक्षों का शिलान्यास एवं रमसा में निर्मित एक कक्ष का लोकार्पण किया।

क्षेत्रीय सांसद मीणा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रार्थना हॉल के लिए 15 लाख तथा राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय में प्रार्थना हॉल के लिए 10 लाख रुपये की घोषणा की।

विधायक प्रताप गमेती ने शैक्षिक विकास को ग्राम्य विकास का मूलाधार बताया और विद्यालय विकास के लिए हरसंभव योगदान का आश्वासन देते हुए विद्यालय में दो कक्षा-कक्षों की घोषणा की। समारोह को स्थानीय सरपंच कैलाश शर्मा ने भी संबोधित किया।

प्रारंभ में विद्यालय के संस्था प्रधान औंकारलाल तेली ने स्वागत उद्बोधन में विद्यालयी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय की संस्था प्रधान हेमा सालवी ने भी अपने विचार रखे। संचालन शिक्षक तुलसीराम दवे ने किया। इस अवसर पर विभिन्न वार्ड पंच, समाजसेवी दीपक शर्मा, केशव व्यास, दिनेश शर्मा, दुर्गाशंकर शर्मा, विनिश व्यास सहित अन्य गणमान्य, ग्रामवासी, स्थानीय विद्यालयो के शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

वोडाफ़ोन एम-पैसा राज्य सरकार द्वारा सम्मानित

उदयपुर। वोडाफ़ोन इण्डिया को राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (आरजीएवीपी) के साथ साझेदारी में वोडाफ़ोन एम-पैसा के माध्यम से ग्राम संगठन / स्वयं सहायता समूहों में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री सुरेन्द्र गोयल ने 3 ब्लॉक्स में इस परियोजना के सफलतापूर्वक निष्पादन के लिए वोडाफ़ोन को यह पुरस्कार प्रदान किया। इसके अलावा, वोडाफ़ोन इण्डिया को आरजीएवीपी के द्वारा 6000 से ज़्यादा स्वयं सहायता समूहों को मोबाइल वॉलेट के माध्यम से उनके बचत खाते में तुरन्त जमा हेतु एम-पैसा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए 7 और ब्लॉक सौंपे गए हैं।

वोडाफ़ोन इण्डिया में राजस्थान सर्कल के बिज़नेस हैड अमित बेदी ने कहा कि हम इस सम्मान के लिए राज्य सरकार के प्रति आभारी हैं और बेहद उत्साहित महसूस कर रहें हैं कि वित्तीय समावेशन एवं सशक्तीकरण की दिशा में हमारे प्रयासों को सराहा गया है। हमें खुशी है कि हमें 7 और ब्लॉक्स में आरजीएवीपी के साथ अपनी एम-पैसा सेवाओं को विस्तारित करने का अवसर मिला है। इसमें उदयपुर का झाडोल, बारन का चिपाबरोड, भीलवाड़ा का आसिन्द, अजमेर का केकरी, झालावाड़ का बकानी, डूंगरपुर का सिमलवारा और जोधपुर का बलेसर शामिल है।

इस साझेदारी की शुरूआत 6 महीने पहले राजस्थान के 3 ब्लॉक्स- बांसवाड़ा में आनंदपुरी, जोधपुर में बाप और जैसलमेर संकर में हुई थी। वोडाफ़ोन एम-पैसा ने सुनिश्चित किया कि जिन महिलाओं को पहले पैसे के लेनदेन के लिए 15-20 किलोमीटर पैदल चल कर जाना पड़ता था, वे अब अपने ही गांव में मौजूद स्वयं सहायता समूह मीटिंग पॉइन्ट्स के माध्यम से पैसा भेज सकती हैं और पा सकती हैं। इन 3 ब्लॉक्स में परियोजना के सफलतापूर्वक संचालन के द्वारा मोबाइल वॉलेट- वोडाफ़ोन एम-पैसा के माध्यम से स्वयं सहायता समूह मीटिंग पॉइन्ट्स पर रु 1.55 करोड़ से ज़्यादा के लेनदेन किए जा चुके हैं। आरजीएवीपी गरीब परिवारों की महिलाओं को नकद के रूप में छोटे ऋण देता है। ऋण ग्रामीण संगठनों/ स्वयं सहायता समूहों के नेताओं और कैशियरों को दिए जाते हैं जो कारोबार चलाते हैं। ऋण की इस राशि का वितरण नकदी के रूप में किया जाता है और पुनर्भुगतान की राशि आवर्ती रूप से संग्रहित की जाती है। वोडाफ़ोन एम-पैसा वॉलेट के साथ, ऋण की राशि को तुरन्त लीडरों के द्वारा निजी बचत खाते में जमा कर एसएमएस के द्वारा व्यक्ति के हैण्ड सैट पर तुरन्त कन्फ मेंशन भेजा जाता है।

बुद्धा इंटरनेशनल सर्किट में महिन्द्रा रेसिंग परवान पर

उदयपुर। महिन्द्रा रेसिंग ने बुद्धा इंटरनेशनल सर्किट में अपनी नई एम2इलेक्ट्रो फॉर्मूला ई इलेक्ट्रिक रेसिंग कार, और नई एमजीपी30 रेसिंग मोटरसाइकिल की अविश्वसनीय शक्ति और निष्पादन का प्रदर्शन किया। यह रेसिंग मशीने महिन्द्रा की बढ़ती प्रौद्योगिक विशेषज्ञता की प्रतीक तथा रेसिंग के प्रति बढ़ती प्रतिबद्धता की प्रतीक है। एम2इलेक्ट्रो और एमजीपी30 दोनों क्रमशः फॉर्मूला ई इलेक्ट्रिक रेसिंग कार चैम्पियनशिप और मोटो जीपी वर्ल्ड मोटरसाइकिल रेसिंग चैम्पियनशिप के लिए योग्य है।

एम2इलेक्ट्रो को महिन्द्रा रेसिंग ने फॉर्मूला ई चैम्पियनशिप में प्रतिस्पर्धा के लिए विकसित किया है। महिन्द्रा के अतिरिक्त चंद निर्माता हैं जिन्होंने इस रेसिंग सीरीज के लिए बिल्कुल नई इलेक्ट्रोपावरट्रेन का निर्माण किया है। सैकिण्ड जनरेशन महिन्द्रा एम2इलेक्ट्रो इतनी गतिमान है कि महज तीन सैकण्ड के भीतर ही 0-100 किलोमीटर की रफ्तार पकड़ लेती है। इसे इस विस्तृत प्रदर्शन, ऊर्जा दक्षता और कम वजन को ध्यान में रख कर डिजाइन किया गया है। महिन्द्रा रेस ट्रैक से प्राप्त तकनीकी प्रगति से काफी कुछ सीख रहा है और यह इसका प्रयोग नई पीढ़ी की इलेक्ट्रिक रोड कारों के निर्माण में करेगा। यह रोड कारें महिन्द्रा के 'फ्यूचर ऑफ मोबिलिटी' के दृष्टिकोण की परिचायक है जिसमें ऐसे वाहन जो क्लीन, क्लेवर, कन्विनेन्ट, कॉस्ट इफेक्टिव और कनेक्टेड हों।

महिन्द्रा रेसिंग एमजीपी 30 मोटरसाइकिल में नया इंजन, गियर बॉक्स और एयरोडायनेमिक पैकेजेज तथा चेसिस में संशोधन एवं इलेक्ट्रिक पुर्जे हैं। नई महिन्द्रा एमजीपी30 को फैक्ट्री की एन्ट्री टीम युवा राइडर पिको बेगनिया (19, आईटीए) और जॉर्ज मार्टिन (18, एसपीए) के साथ हुई। इसके अलावा महिन्द्रा के तीन ग्राहकों की टीम एमजीपी30 के साथ टीम सीआईपी, द आउट बॉक्स रिसेट टीम और एमटीए टीम इटेलिया ग्रिड पर दौडाएंगे हर बाइक पर दो सवार होंगे। मोटो जीपी के लिए महिन्द्रा परिवार एसपी रेसिंग के लिए नया है जिसमें प्रभावी फ्रेंचमैन एलेक्सिस मासाबू(28) ओर ब्रिटॉन जॉन मैकफी (21) इस मोटो3 वर्ल्ड चैम्पियनषिप में महिन्द्रा की एमजीपी30 प्यूगोट के साथ भाग ले रहे हैं।

इंडियावुड का आयोजन 25 से

700 से अधिक कंपनियों की होगी भागीदारी

उदयपुर। फर्नीचर उत्पादन तकनीकों, वुडवर्किंग मशीनरी, औजारों, फिटिंग्स, एसेसरीज, कच्चा माल तथा उत्पादों के लिए दुनिया का सबसे बड़ा ट्रेड शो इंडियावुड बंगलौर इंटरनेशनल एक्जिबिशन सेंटर में 25 से 29 फरवरी तक आयोजित किया जाएगा। इंडियावुड में राजस्थान से फर्नीचर तथा किचन निर्माता, सॉ मिलर्स, टिम्बर व्यापारी, प्लाइवुड/एमडीएफ/पार्टिकल बोर्ड/ लैमिनेट निर्माता और व्यापारी, फर्नीचर फिटिंग्स/हार्डवेयर के व्यापारी और निर्माता, आर्किटेक्ट्स, भवन निर्माता और इंटीरियर डिजाइनर्स आदि भाग लेंगे।

शिवकुमार वी. जनरल मैनेजर, पीडीए ट्रेड फेयरर्स ने कहा कि इंडियावुड भारत में पिछले दो दशकों से सबसे महत्त्वपूर्ण द्विवार्षिक आयोजन रहा है, अब यह अंतर्राष्ट्रीय वुडवर्किंग उद्योग में भी अपनी खास जगह बना रहा है। पिछले कुछ संस्करणों के दौरान इंडियावुड में विदेशों से 50 प्रतिशत से अधिक प्रदर्शनीकर्ताओं की भागीदारी रही है। इस बार इंडियावुड में भारत के 17 राज्यों तथा विश्व के 40 देशों से 700 से अधिक कंपनियां, भाग लेंगी साथ ही इसमें नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, मलेशिया, म्यांमार, भूटान, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया और फिलीपीन्स से प्रतिनिधि आएंगे। इस दौरान 200 से अधिक उत्पाद लांच किए जायेंगे, 500 से अधिक वुडवर्किंग मशीनों का लाइव डिमांस्ट्रेशंस, 40,000 से अधिक व्यापारिक आगंतुकों की भागीदारी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ऑर्किटेक्ट्स, कर्नाटक चैप्टर के सहयोग से वुड इन आर्किटेक्चर विषय पर अंतर्राष्ट्रीय वक्ताओं की भागीदारी वाले सेमिनार, फर्नीचर वितरकों का सम्मेलन तथा फर्नीचर निर्माताओं को कारोबार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए सोर्सिंग फोरम उपलब्ध कराये जाएंगे।

अमरूद के स्वाद वाली पल्स लॉन्च

उदयपुर। धर्मपाल सत्यपाल ग्रुप ने अमरूद के स्वाद वाली पास पास पल्स को लॉंच किया है। 'पल्स ग्वावा' के उपभोक्ताओं को स्वाद का एक नया आनंद मिलेगा, क्योंकि इसमें अमरूद की सुगंध के साथ चटपटेपन का मेल है। पाउच में उपलब्ध इस नई कैंडी का मूल्य 1 रुपया है।

शशांक सुराना, उपाध्यक्ष, नए उत्पाद, डीएस ग्रुप ने कहा कि देश के दिल की धड़कन बन चुके कच्चा आम के स्वाद वाले पास पास पल्स की जबर्दस्त कामयाबी के बाद हार्ड ब्यॉल्ड कैंडी सेगमेंट में 'पल्स ग्वावा' डीएस ग्रुप का दूसरा उत्पाद है। इसे बाजार के व्यापक अनुसंधान एवं उपभोक्ताओं के सुझाव के आधार पर तैयार किया गया है। अनुसंधान से पता चला है कि थोड़े चटपटेपन के साथ अमरूद का स्वाद सभी उम्र के लोग बेहद पसंद करते हैं। फ्लेवर्स डीएस ग्रुप समूह के इतिहास का एक अभिन्न हिस्सा है। अमरुद के स्वाद वाली पल्स के लॉच के साथ ही भारतीय ग्राहकों के लिए नए और रोमांचक उत्पादों को बनाने स्वरुप, अपनी प्रतिबद्धता के लिए ग्रुप आगे बढ़ रहा है। कच्चा आम की तरह अमरुद, चटपटेपन के साथ एक ऐसा स्वाद है जो देशभर में लोकप्रिय है। 'पल्स ग्वावा', पाउडर भरी कैंडी है जो अमरुद के साथ चटपटे स्वाद का मज़ा देती है। इस कैंडी को पूरे भारत में लॉन्च किया जा रहा है।

निहार नैचुरल्स आइएमकैपेबल नेशनल रिपोर्ट जारी

उदयपुर। बॉलीवुड अभिनेत्री विद्या बालन ने कोलकाता में हुये कार्यक्रम के दौरान निहार नैचुरल्स आइएमकैपेबल नेशनल रिपोर्ट को जारी किया। एक ब्रांड के रूप में, निहार हमेशा महिलाओं के मन की आवाज के लिए खड़ा रहा है और उनके लिए प्रगतिशील जिंदगी का समर्थन किया है। इस बार, निहार ने भारतीय महिलाओं को यह अहसास कराने का काम अपने ऊ पर लिया है कि महिला के सामर्थ्य का फैसला करने के लिए एपीयरेंस यानी लुक्स एक टूल (साधन) नहीं हो सकता।

एक सशक्त माध्यम के जरिये महिलाओं को उनके आंतरिक सामर्थ्य के बारे में संवेदनशील बनाने के लिए, जोकि उनके साथ फौरन प्रतिबिम्बित होता है, निहार नैचुरल्स ने आइएमकैपेबल रिपोर्ट को लॉन्च किया। यह एक राष्ट्रीय अध्ययन है जिसे नील्सन द्वारा संचालित किया गया। इस रिपोर्ट के अनुसार 64 प्रतिशत भारतीय महिलायें इस बात से सहमत हैं कि उन पर दिये गये फैसलों से उनके असली सामर्थ्य तक पहुंचने की क्षमता प्रभावित हुई है, 69 प्रतिशत भारतीय पुरुष मानते हैं कि महिलाओं को लेकर उनका निर्णय उनके लुक्स पर आधारित होता है, 60 प्रतिशत भारतीय पुरूष इस बात से सहमत हैं कि छोटे बालों वाली महिलायें लंबे बालों वाली महिलाओं की तुलना में आत्मनिर्भर बनने में अधिक समर्थ होती हैं, 72 प्रतिशत भारतीय महिलायें इस बात से सहमत हैं कि गृहिणयों की तुलना में कामकाजी महिलाओं को उनके लुक्स अथवा उनके कपड़ों पर अधिक फैसलों का सामना करना पड़ता है, सर्वेक्षण में शामिल 69 प्रतिशत महिलायें इस बात से राजी हैं कि वे समाज के लोगों द्वारा उन पर दिये जाने वाले निर्णयों से आजादी चाहती हैं।

लेज़ देगा अंतर्राष्ट्रीय यात्रा जीतने का मौका

उदयपुर। पेप्सीको इंडिया की अग्रणी पोटैटो चिप ब्रांड लेज़ ने अपना सबसे बड़ा कंज़्यूमर इंगेजमेंट अभियान 'लव टू लव इट' लॉन्च किया है जो अंतर्राष्ट्रीय स्थल की यात्रा का टिकट बन सकता है। यह प्रमोशन 30 अप्रैल तक चलेगा जो दो लोगों को प्रतिसप्ताह अंतर्राष्ट्रीय यात्रा के साथ प्रतिदिन 65000 रु. मूल्य का एक 108 सेमी. (43 इंच) का एलईडी टीवी एवं होम थिएटर जीतने का मौका देगा। इसमें भाग लेने के लिए लेज़ का प्रोमो पैक खरीदना होगा। प्रोमो पैक के बैक पर सिल्वर पैच स्क्रैच करने पर ग्राहक को एक कोड मिलेगा, जिसे 08980808080 पर भेजकर पुरस्कार जीतने का मौका पा सकते हैं। यह प्रमोशन लेज़ के 20 ग्रा., 52 ग्रा. एवं 95 ग्रा. के सभी 6 फ्लेवर्स पैक पर लागू है, जिनका मूल्य क्रमशः 10, 20 एवं 35 रुपये है।

पार्थो चक्रवर्ती, वाईस प्रेसिडेंट, स्नैक्स कैटेगरी, पेप्सीको इंडिया ने कहा कि ग्राहकों ने हमेशा लेज़ के लिए अपना प्यार दिखाया है। लेज़ अंतर्राष्ट्रीय फ्लेवर वाला अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड है। हम उपभोक्ताओं को अंतर्राष्ट्रीय स्थान पर जाने के साथ रोज एलईडी+होम थिएटर जीतने का आकर्षक मौका दे रहे हैं। यह प्रोमो कैम्पेन एक फिल्म के साथ शुरु होगा, जिसमें ब्रांड एम्बेसडर रणबीर कपूर दिखाई देंगे।

लेज़ के ब्रांड एम्बेसडर, रणबीर कपूर ने कहा कि यह टीवीसी मनोरंजक तरीके से प्रमोशन संदेश का प्रसार करता है। यह कैम्पेन के पहले टीवीसी का एक्सटेंशन है। यह आकर्षक प्रमोशन है एवं मुझे विश्वास है कि उपभोक्ता यह अवश्य पसंद करेंगे।

सुविवि-कोलंबो विवि के बीच एमओयू

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय तथा श्रीलंका के कोलम्बो विश्वविद्यालय के बीच शैक्षिक आदान प्रदान तथा उन्नयन के लिए एक एमओयू (करार)किया गया है। विवि के प्रवक्ता डॉ. कुंजन आचार्य ने बताया कि कुलपति प्रो आईवी त्रिवेदी द्वारा हाल ही में की गई श्रीलंका यात्रा के दौरान कोलम्बो विवि ने सुखाडिया विवि के साथ विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए एमओयू करने की मंशा जताई। इस पर प्रो त्रिवेदी ने सकारात्मक रुख अपनाते हुए एमओयू को हरी झंडी दे दी। इस एमओयू में सेन्टर फोर एक्सीलेन्स, पत्रकारिता एवं जनसंचार, स्किल डवलपमेन्ट, पर्यटन, पर्यावरण विज्ञान, भाषा कौशल विषयों पर शार्ट टर्म पाठ्यक्रमों का निर्माण होगा जो कोलम्बो विश्वविद्यालय में पढाया जाएगा साथ ही वहां के शिक्षक तथा विद्यार्थी यहां आकर इन विषयों की बारीकियों को समझेंगे। इस एमओयू के तहत विभिन्न कमेटियों का भी गठन किया गया है जो इन विषयों पर चिंतन करेंगी। कुलपति की अध्यक्षता में सोमवार को आयोजित बैठक में प्रो प्रदीप त्रिखा, प्रो सीमा मलिक, प्रो कनिका शर्मा, प्रो विनोद अग्रवाल, प्रो अनिल कोठारी, प्रो पीआर व्यास, प्रो अशोक सिंह, डॉ. गिरिराजसिंह चौहान ने भाग लिया।

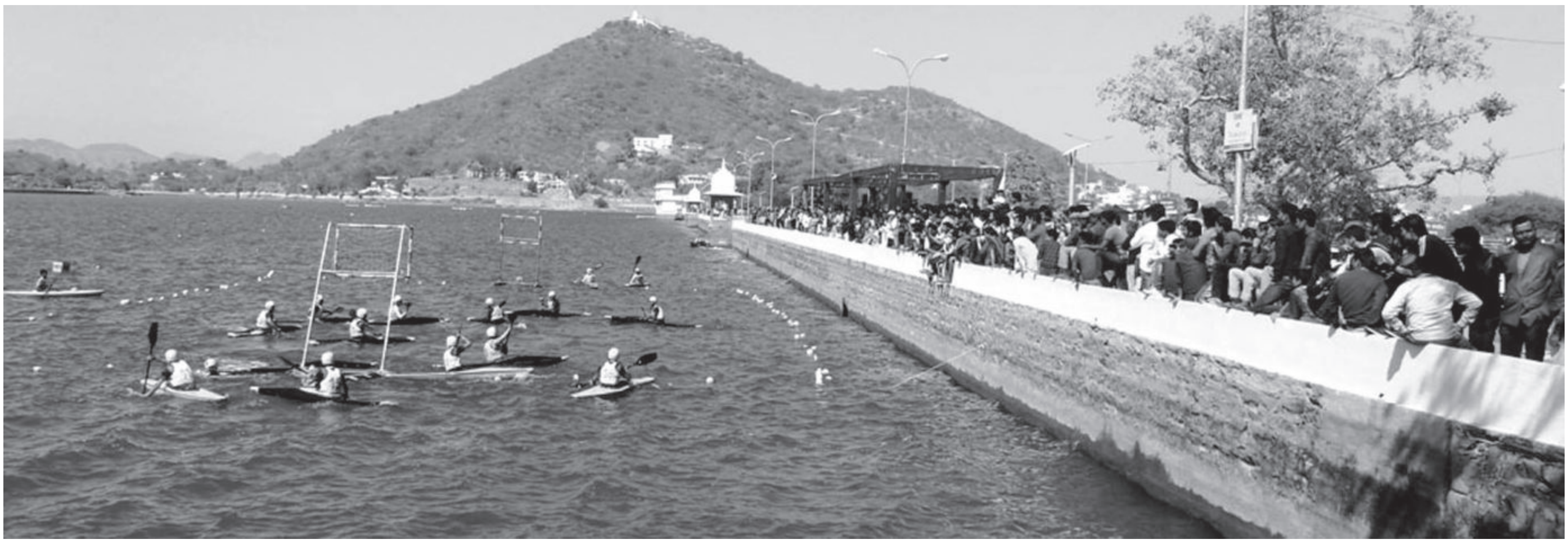

झीलों की हथेली पर रोमांचित नौकाएं

पहली बार आयोजित झीलोत्सव, पीछोला-रंगसागर-स्वरूपसागर-फतहसागर का अंतरंग उन्मीलन

उदयपुर में आयोजित लेक फेस्टिवल में देश के विभिन्न राज्यों से आयी टीमों के 350 प्रतिभागियों द्वारा मार्चपास्ट किया गया। झीलों में होने वाली स्पर्धाओं और रोमांचक खेलों में दिल्ली, गुजरात, जम्मू कश्मीर, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, इण्डियन नेवी एवं आईटीबीपी के पुरुष एवं महिला प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पर्यटन विभाग के प्रमुख शासन सचिव शैलेन्द्र अग्रवाल ने कहा कि राजस्थान में मेलों-पर्वों और त्योहारों को पर्यटन से जोड़ने से व्यापक बदलाव आया है। इससे देशी-विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ी है और पर्यटन विकास को संबल मिला है। उन्होंने झीलों को आपस में जोड़कर नौकायन के जरिये जलमार्ग को शुरू रखने पर जोर दिया और कहा कि उदयपुर की झीलों में फ्लोटिया शुरू की जाएगी। इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सात खिलाड़ियों सवश्री विजेन्द्रसिंह, रवीन्द्र व अरुण नांगल (हरियाणा), महेश विश्वकर्मा एवं मनमोहन डांगी(मध्यप्रदेश), अरुणसिंह(मणिपुर) तथा दिलीपसिंह चौहान (उदयपुर) का उपरणा एवं पगड़ी पहना कर अभिनंदन किया।

महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने झीलों को उदयपुर की आत्मा एवं जान बताया और कहा कि स्मार्ट सिटी के लिए चयनित उदयपुर के 44 फीसदी लोगों की पहली प्राथमिकता पर्यटन विकास है और इसी के आधार पर उदयपुर में पर्यटन विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। महापौर ने पर्यटन विकास की दृष्टि से हो रहे कार्यों का जिक्र किया। विभूति पार्क, बर्ड पार्क, रेल्वे की द्वितीय एन्ट्री आदि की जानकारी दी और बताया कि क्षेत्र की पहाड़ियों को हरा-भरा बनाने और वनीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हर साल वन विभाग को दस करोड़ की धनराशि दी जाएगी। इसके लिए हरसंभव भागीदारी निभाने और हर नागरिक से स्मार्ट बनने की अपील की। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने झीलों के जलमार्ग का लाभ आम जनता के लिए सुलभ कराने के लिए इसकी कम दरें रखी जाने का सुझाव दिया।

समारोह के बाद फतहसागर झील में जल क्रीड़ा गतिविधियां हुई। इनमें ड्रेगन बोट रेस, केनो पोलो की नेशनल चैम्पियनशिप तथा कायाकिंग, केनाइंग व रोविंग गतिविधियां हुई। इन रोचक और मनोहारी कार्यक्रमों को देखने के लिए झील के किनारे व पाल पर देशी-विदेशी पर्यटकों एवं स्थानियों का जमघट लगा रहा।

इससे पूर्व प्रभु श्रीनाथजी की दूधतलाई घाट पर पूजा-अर्चना हुई और वहां से श्रीनाथजी की छवि को सुसज्जित नौका में विराजित कर नौका विहार कराया गया। श्रीजी की नौका गणगौर घाट पहुंचने पर जिलाधिकारियों, जन प्रतिनिधियों एवं शहरवासियों ने पूजा-अर्चना की और आरती उतारी। लेक फेस्टिवल के लिए सजी-धजी नौकाएं आकर्षण का केन्द्र रहीं वहीं काईट फ्लाइंग ने भी खूब लुभाया।

दूसरे दिन फतहसागर झील सहित विभिन्न स्थलों पर देशी-विदेशी पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों ने फेस्टिवल की मनोहारी गतिविधियों को निहारा और आनंद उठाया। फ्तहसागर झील में नौकाओं से संबंधित विभिन्न रोमांचक और साहसी स्पर्धाओं ड्रेगन बोट, केनो पोलो, कायाकिंग व रोइंग प्रदर्शन को निहारने पाल पर दर्शकों का जमघट लगा रहा। आकर्षक प्रस्तुतियों के साथ स्वाँग कलाकारों ने विभिन्न ऐतिहासिक पात्रों के मुखौटों के साथ मनमोहक अदाकारी प्रस्तुत की और लोगों का मनोरंजन किया। झील में बने मंच से अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों ने मधुर स्वर लहरियां बिखेरी। बैण्डवादन ने भी खासा रंग जमाया। पतंगबाजी ने आकर्षण बिखेरा। इसी प्रकार गणगौर घाट, दूधतलाई में श्रीनाथप्रभु के दर्शन के साथ ही नौकायन, फ्लोटिंग मार्केट आदि ने भी मन मोहा।

स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. आरके नगर, निम्बाहेड़ा के सौजन्य से राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, बडोली माधोसिंह में कक्षा 9 से 11 तक की समस्त छात्राओं को स्वास्थ्य जागरुकता एवं संप्रेषण प्रशिक्षण परिवार सेवा संस्थान, अजमेर की प्रशिक्षक टीम की श्रीमती अनीता उपाध्याय (परियोजना अधिकारी), श्रीमती हेमलता अग्नानी, श्रीमती लक्ष्मी टांक एवं श्रीमती सुमन जैन द्वारा प्रदान किया गया।

वण्डर सीमेण्ट के प्रतिनिधि हेमेन्द्रसिंह झाला ने बताया कि उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत रा.मा.वि. फाचर अहिरान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा जिसमें किशोरी छात्राओं को स्वच्छता का महत्व, व्यक्तिगत स्वच्छता, पर्यावरण की स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, विद्यालय एवं घर परिवार में शौचालय का उपयोग एवं रख-रखाव, संतुलित एवं पोष्टिक आहार, किशोरावस्था में शारीरिक व मानसिक परिवर्तन, प्रजनन स्वास्थ्य, एच.आई.वी., यौन जनित संक्रमण रोगों से बचाव, हुनर आधारित प्रशिक्षण तथा प्रभावी संप्रेषण के साथ-साथ बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं पर आधारित विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

छात्राओं ने बड़ेही मनोयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर अपने मन में छिपे सवालों का समाधान प्रशिक्षिकाओं से जाना साथ ही भविष्य में इस विषय पर छात्राओं के सहयोग के लिये विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती वसीमा मंसूरी जीवन कौशल शिक्षा में मार्गदर्शिका के रुप में सहयोग करेगी। कार्यक्रम का संयोजन वण्डर सीमेण्ट के राहुल व्यास ने किया। प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, बडोली माधोसिंह के प्रधानाचार्य डॉ. धर्म नारायण भारद्वाज ने वण्डर सीमेण्ट लि. एवं परिवार सेवा संस्था, अजमेर के संदर्भ व्यक्तियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

बाराबंकी में चिकित्सा शिविर संपन्न

उदयपुर। दरिद्रनारायण की चिकित्सा सेवा करने वाले दुनिया के एक मात्र संत स्वामी रामज्ञान दास महाराज द्वारा आयोजित 20 दिवसीय नेत्र, हार्निया, हाइड्रोसील, पाइल्स, यूट्रेस का सर्जरी शिविर देश-विदेश के सेवाभावी डाक्टरों के सम्मान समारोह के साथ सम्पन्न हो गया। शिविर में डॉ. जेके छापरवाल के नेतृत्व में उदयपुर से शताधिक चिकित्सक, सेवार्थियों के दल ने सराहनीय भागीदारी निभायी।

इस अवसर पर स्वामी रामज्ञान दास महाराज ने डाक्टरों को फल, अंग वस्त्र देकर सम्मान किया। स्वामी जी ने कहा कि इस कलिकाल में रोगी नारायण में ईश्वर के दर्शन करने वाले डॉक्टर बधाई के पात्र हैं। उन्होंने जिला प्रशासन स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग, नगर पंचायत बंकी को इस आयोजन में उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया। आश्रम के सेवादार मनीष मेहरोत्रा ने बताया कि ऑपरेशन किये हुए मरीजों के फोलोअप करने के लिए नर्सिंग टीम अभी आश्रम में रहेगी। सभी के टांके कांटने के बाद मरीजों को छोड़ा जायेगा। नेत्र के हुए आपरेशन के मरीजो को 21 फरवरी को पुन: आश्रम पर बुलाया गया है। मरीजों की सेवा के लिए अभी सत्संगी लोग आश्रम में उपस्थित हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल- 9414165391 ● टाईटल रजि. RAJHIN 17670 ● Email : shabdranjanudr@gmail.com ● सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।